निरंजन श्रीवास्तव, नौवीं, ऊँचिया, दतिया, म.प्र.

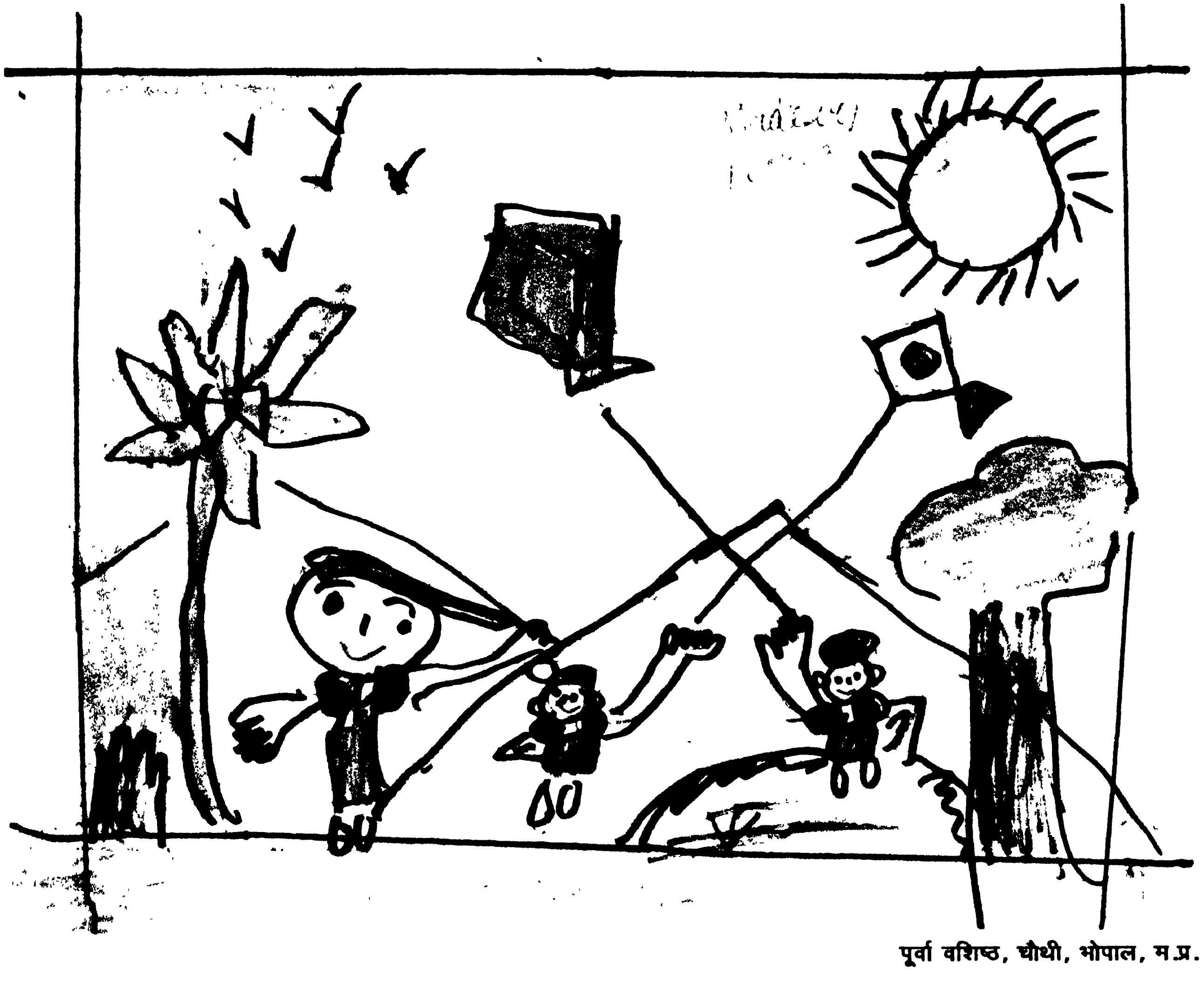

पूर्वा वशिष्ठ, चौथी, भोपाल, म.प्र.

135 वें अंक में ....

विशेष

❑ अर्चित मिश्रा, विक्रम सिंह ठाकुर, दारख्या आट्या वसावे, चन्द्रशेखर चौधरी, आशीष साहू, कमला, स्वाति गुहा, सुषमा ढोक, हरी बाबू, चंचल, सीमा, सत्यनारायण सिंह, अनुज चौहान, सतीष चौहान, डोलामणि भोई, चैती कनमडीकर, मनीष गुप्ता, नजमा बी , डूंगरसिंह परिहार, देवयानी अग्रवाल, आनंद कुमार सिंह, विक्रमसिंह लाहोरी, प्रीति, नाहिद खान, सोनू चौबे, सुबोध साकल्ले, चेतन रांका, रामावतार, अनिल राय, ऋचा शर्मा, रेनु शर्मा, महबीश, कीर्ति चौहान, पलाश गांगुली, उर्वशी प्रसाद, निरंजन श्रीवास्तव, अंकित, पूर्वा वशिष्ठ, संगीता मिश्रा और सबीना सबरवाल के ***चित्र।***

❑ हर्षित शर्मा, रघुवीर सिंह देवडा, रवीन्द्रसिंह, मनोज द्विवेदी, मंदाकिनी, श्रुति चौबे, हरी बाबू, दीनदयाल गौर, कृष्ण कुमार साहू, पंकज पोरवाल, अली असगर खाँ, अंकेश पटेल जगदीश साहू, विजयसिंह, वर्षा श्रीवास्तव और स्मिता पाण्डेय की ***कहानियाँ।***

❑ के. रामदास, चन्द्रपाल सिंह, राजपूत, सुनीता बौरासी कुलदीप यदु, रूपेश अग्रवाल, ज़रीना मुश्ताक, कमला राना गणपतलाल, योगिता अमोल्या, सोनू चौहान, राज अभिषेक विनोद प्रजापत, गुरमीत सिंह सिक्ख, लक्ष्मीसिंह, विजय गुप्त तथा नवीन सागर की ***कविताएँ*** विजय लक्ष्मी गेन्डरे तथ वीरेन्द्र यादव की ***पहेलियाँ।***

हर बार की तरह

29 ❑ हमारे वृक्ष -54 : आकाश नीम

30 ❑ माथा पच्ची

32 ❑ खेल काग़ज़ का

धारावाहिक

34 ❑ क़िस्सा-बुरातीनो का : 6

और यह भी

2 ❑ पाठक लिखते हैं

3 ❑ नकल से बचो : मन से रचो

27 ❑ एक मज़ेदार खेल : तोप

39 ❑ तुम भी बनाओ

आवरण : पलाश गांगुली, नौ वर्ष, भोपाल, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-12 अंक-5 नवम्बर, 1996

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल बिश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पाँच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

काग़ज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/25,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462016

(म. प्र.)

फ़ोन : 563380

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चकमक का सितम्बर अंक विशेष आकर्षक लगा। नकल का इलाज नकल से ही वाह! 'नन्हा नकलची' नाटक बहुत पसन्द आया।

बच्चों के बहुमुखी सृजन को प्रकाश में लाने वाली राष्ट्रीय स्तर पर चोटी की पत्रिका है यह। ओक और टिटहरी सम्बंधी रचनाओं की प्रस्तुति मोहक है बधाई।

❑ जगदीश चन्द्र शर्मा, गिलूंड, राजस्थान

निश्चय ही चकमक अपने लक्ष्य की ओर हर क़दम बेहद सोच-समझ कर रख रही है। विश्वास है बच्चों की चेतना विकास का यह कार्य निश्चय ही सफल होगा।

❑ सूरज शर्मा, बीकानेर, राजस्थान

मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मुझे आपकी पत्रिका में सवालीराम, कहानियाँ, चित्र वग़ैरह सभी रुचिकर लगते हैं।

❑ राकेश आर्य, चिचौली, छिंदवाड़ा, म.प्र.

आपकी पत्रिका अपनी साख बनाए हुए है यह देखकर संतोष होता है। आजकल बाल पत्रिकाएँ बहुत कम हैं जो अच्छी तरह चलती रहें। चकमक उनमें से एक है। आशा है यह पत्रिका बाल साहित्य के प्रति अपना उद्देश्य पूर्ण करेगी।

❑ बाबूलाल शर्मा 'प्रेम', लखनऊ, उ.प्र.

सितम्बर, 96 में प्रकाशित नन्हा नकलची, माथापच्ची, स्ट्रॅाबेरी, किस्सा बुरातीनो का बहुत अच्छा लगा। हमें चकमक बहुत अच्छी लगती है।

❑ कुमारी नाहिदा खान, मोहम्मद मोहसिन खान; मोहम्मद बालम खान, नर्मदा नगर, खण्डवा, म.प्र.

मैं पंजाब का निवासी हूँ। मुझे मनोरंजक तथा ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ तथा निबन्ध पढ़ने का बहुत शौक है। पत्रिकाओं की एक पुस्तक में आपकी पत्रिका के बारे में पढ़ा। मुझे महसूस हुआ कि आपकी पत्रिका में वे सभी विशेषताएँ मौजूद हैं, जिनकी मुझे ज़रूरत है।

❑ विजय शर्मा, बरनाला, पंजाब

मैं आपका चकमक नियमित पढ़ता रहता हूँ। मुझे बहुत आनंद और ज्ञान मिलता है। इस बार 'नन्हा नकलची' और 'टिटहरी छत पर' ये दोनों बहुत पसन्द आए।

❑ कालरिया शैलेष, लोकभारती, सणोसरा, गुजरात

पाठक लिखते हैं

सितम्बर, 96 अंक में सींग टूटा, पेड, मेरा कुत्ता आदि रचनाएँ अच्छी लगीं। टिटहरी पर ज्ञानवर्द्धक लेख ने मार्गदर्शन किया।

❑ नूररज़ा चौधरी, सम्भल, मुरादाबाद, उ.प्र.

हम जब भी हमारे केन्द्र पर (माध्यमिक विद्यालय खाचरोद) नियमित डाक देने जाते हैं, पत्रिका पढते हैं, परन्तु कभी-कभी ही मिल पाती है। चकमक में बालपयोगी सामग्री तो है ही परन्तु शिक्षकोपयोगी सामग्री भी मिलती है।

हम चाहते हैं कि अधिकतर बालक व्यक्तिगत तौर से घर पर इसे मँगवाएँ व पढें, देखें, रुचि लें व सहभागी बनें तथा चकमक के सदस्य बनें। अधिकांशतया पश्चिम म.प्र. के बच्चों की रचना, चित्र या कविता कम ही देखने को मिलती है।

अत प्रत्येक शाला या अधिक से अधिक शाला के बालक भी इसके सहभागी -सहगामी बनें ऐसी कोई योजना बनाइयेगा।

❑ श्रीराम बी. वर्मा, केसूर, धार, म.प्र.

पाठकों के नाम ...

लगभग हर पत्रिका में कोई एक ऐसा कॉलम होता है जिसमें उसके पाठक पत्रिका के बारे में अपनी राय, प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। पत्रिका उन्हें कैसी लग रही है, कौन से कॉलम उन्हें अच्छे लगते हैं, कैसी रचनाएँ अच्छी लगती हैं, पत्रिका में क्या कमी है, उसकी साज - सज्जा कैसी है, और क्या चीज़ें होनी चाहिए आदि पर लिखते हैं।

चकमक में भी 'पाठक लिखते हैं ...' कालम इसी अपेक्षा के साथ शुरू से रखा गया है। लेकिन पिछले कुछ समय से यह देखने में आया है कि आने वाले पत्रों में अधिकांश पत्र केवल कोरी प्रशंसा से ही भरे होते हैं। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि शायद वे छपने की बात को ही ध्यान में रखकर लिखे गए हैं। इन पत्रों को हम छाप भले ही दें, पर इनसे हमें चकमक को और बेहतर बनाने में कोई मदद नहीं मिलती।

पहले भी एक बार ऐसी ही स्थिति बनने पर 'पाठक लिखते हैं' बन्द कर दिया गया था। लेकिन फिर यह भी लगा कि जब कालम ही नहीं होगा तो पाठक लिखेंगे कहाँ? और .. कालम पुनः शुरू किया गया। बहरहाल यह कालम जारी रहेगा, इस अपेक्षा के साथ कि सभी पाठक चकमक के बारे में अपनी राय बिना किसी लाग-लपेट के लिखेंगे।

❑ चकमक

मुझे आपकी पत्रिका चकमक बहुत पसन्द आई। मेरे दोस्तों ने भी इसे पसन्द किया। सितम्बर अंक में छपा नाटक 'नन्हा नकलची' बहुत अच्छा लगा। उम्मीद करता हूँ कि आने वाली पत्रिकाओं में ऐसे नाटक होंगे तथा अच्छी-अच्छी रचनाएँ प्रकाशित करेंगे।

❑ पुनीत महाजन, फरीदाबाद, हरियाणा

नकल से बचो, मन का रचो

लो हाज़िर है एक और 'मेरा पन्ना' अंक। असल बात तो यह है कि अब तुम्हारी इतनी रचनाएँ आती हैं कि हर अंक में पूरे के पूरे छह 'मेरा पन्ना' देने के बाद भी सभी को स्थान नहीं मिल पाता। इसीलिए हर साल एक ऐसे अंक की ज़रूरत पड़ती है। खैर ...

इस बार हम विशेष तौर पर तुम सबसे जो कहना चाहते हैं, वह है नकल के बारे में। हालाँकि पहले भी हमने इस पर चर्चा की है। बहुत सारी रचनाएँ हमारे पास ऐसी आती हैं जो तुम्हारी अपनी रची या मौलिक नहीं होतीं। इन्हें देखते हुए दो-तीन बातें समझ में आईं -

1. कई रचनाएँ चकमक के पुराने अंकों से उतारकर ज्यों कि त्यों अपने नाम से लिखकर भेज दी जाती हैं।
2. कुछ रचनाएँ ऐसी भी होती हैं जो किसी पुराने अंक से तो उतारी गई हैं लेकिन उनमें थोड़ा हेर-फेर कर दिया गया है।
3. कुछ रचनाएँ खासकर कविताएँ किसी किताब, पत्रिका या फिर अखबार से उतारकर भेज दी जाती हैं।

आमतौर पर ऐसी रचनाओं पर हमारी नज़र पड़ ही जाती है। लेकिन कभी-कभी हम भी गच्चा खा जाते हैं। उदाहरण के तौर पर इस अंक के लिए रचनाओं का चयन करते समय एक ऐसी रचना देखने में आई जो चकमक के मई, 94 के अंक में 'मेरा पन्ना' में छपी 'दादी माँ' की हूबहू नकल थी। इसी दौरान कई और ऐसी रचनाएँ हाथ में आईं., जिन्हें देखकर लगता था कि वे किसी और किताब आदि से उतारी गई हैं।

जब यह अंक बन रहा था, तभी हमें दो पत्र मिले। एक नगरनार, जगदलपुर के **तरूण सारथी** का और दूसरा वाराणसी की **प्योली** का। ये पत्र थे 'पाठक लिखते हैं' में छपी एक छोटी-सी कविता के बारे में। तरूण की एक कविता जुलाई, 96 में छपी थी। एक अन्य पाठक ने इसे ही थोड़ा -सा बदलकर भेज दिया। और वह सितम्बर, 96 में उसके नाम से पुनः छप भी गई। यानी इस बार हम गच्चा खा गए। **प्योली** ने लिखा है, 'चकमक से ऐसी लापरवाही की आशा नहीं थी।' सचमुच यह हमारी लापरवाही के कारण ही हुआ। हमें इसका खेद है।

अव्वल तो यही कहना है कि भई चकमक का उद्देश्य है तुम्हारी अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना, उसे सामने लाना। इसका मतलब यह है कि तुम जो भी सोचते हो, कल्पना करते हो, अपने आसपास देखते हो उसे अपने शब्दों में, अपनी शैली में, अपनी लिखाई में लिखकर हमें भेजो। अब अगर तुम किसी और द्वारा की गई अभिव्यक्ति को अपने नाम से भेजोगे तो वह तुम्हारी कहाँ हुई?

दूसरी बात, अगर तुम्हें किसी अन्य किताब, पत्रिका या अखबार में छपी रचना अच्छी लगी, पसन्द आई। और तुम चाहते हो कि वह और लोगों तक भी पहुँचे, तो रचना, उसके लेखक का नाम, जिस किताब या पत्रिका में तुमने पढ़ा उसका नाम आदि हमें लिखकर भेज दो। हम कोशिश करेंगे कि उसे चकमक में छापें।

तीसरी बात, हो सकता है कोई विषय, घटना आदि तुम्हें इतना अधिक भा जाए कि तुम उसी पर लिखना चाहो। तो बेहतर यह होगा कि ऐसी किसी रचना में तोड़-फोड़ या हेर-फेर करने की बजाए तुम उसी विषय पर अपनी तरह से लिखो। नए शब्द, नए प्रतीक, नए बिम्ब इस्तेमाल करो। अपनी शैली, अपनी भाषा में लिखो।

उदाहरण के लिए चिड़िया, फूल, तितली आदि पर बहुत सारी कविताएँ आती हैं। इनमें से बहुत सारी हम छापते भी हैं। लेकिन तुम देख सकते हो कि इन रचनाओं में एक ही विषय पर अलग-अलग ढंग से कहा गया है। यही ढंग तुम्हारी अपनी अभिव्यक्ति है, मौलिकता है।

तो अब हम यह उम्मीद तो कर ही सकते हैं कि आने वाले समय में तुम्हारी जो रचनाएँ चकमक तक पहुँचेगी, उनमें तुम इन बातों का ध्यान रखोगे।

और अंत में एक बात और कि हर रचना के साथ अपना नाम, उम्र या कक्षा तथा डाक का पूरा पता अवश्य लिखा करो। उम्र या कक्षा से तुम्हारी रचना पर विचार करते समय मदद मिलती है। और पता चाहिए तुम्हें पत्र लिखने या फिर रचना छपे तो चकमक भेजने के लिए।

❑ **चकमक**

चुड़ैल

गर्मियों की छुट्टी में मैं अपनी मम्मी के साथ नानी के घर गया। वहाँ मेरे बहुत सारे दोस्त बन गए। मैं रोज़ उनके साथ बगीचे में खेलने जाता था। वहाँ हम सब पिट्ठू, लुका–छिपी और क्रिकेट खेलते थे। हमारा दोस्त मनीष बहुत डरपुक्का था। एक दिन वह हमसे पहले ही बगीचे में पहुँच गया। वह बड़ा खुश हो रहा था कि वह सबसे पहले आया। तभी उसे घुंघरुओं की छम–छम आवाज़ आई। उसने चारों तरफ देखा, पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। वह डर गया, उसने समझा कि बगीचे में कोई चुड़ैल है। वह भागकर हमारे पास आया और रोते हुए उसने हमें चुड़ैल वाली बात बताई। सब बच्चे डर गए।

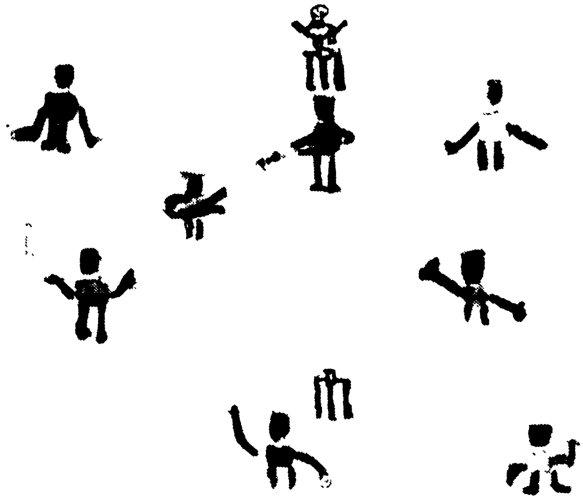

□ अर्चित मिश्रा, पाँचवीं, अजमेर, राजस्थान

चुड़ैल क्या होती है, मैं नहीं जानता था। मैंने नानाजी से पूछा चुड़ैल क्या होती है। नानाजी कोई ज़रूरी काम कर रहे थे। उन्होंने कहा चुड़ैल बकरी होती है। मैं दौड़कर बगीचे में गया। मुझे भी वहाँ घुंघरुओं की आवाज़ सुनाई दी। मैंने चारों तरफ देखा तो मुझे एक बकरी दिखी जिसके पैर में घुंघरू बँधे थे। मैं ख़ूब हँसा। मैंने मनीष और सब दोस्तों को बुलाया और चुड़ैल दिखाई। सब बकरी को देख ख़ूब हँसे और सबने मनीष को ख़ूब चिढ़ाया। हम सब लोग बकरी को चुड़ैल बोलकर ख़ूब हँसते हैं।

□ हर्षित शर्मा, भोपाल, म.प्र.

सिर फूटा

एक बार मैं और मेरा छोटा भाई दीपू हम दोनों क्रिकेट खेल रहे थे। खेलते–खेलते हमने सोचा की बेर तोड़ लाएँ। हम दोनों बेर तोड़ने चले गए। मैंने कुछ बेर पत्थर से गिराए मेरा छोटा भाई बेर बीनने लगा। मैंने उससे कहा कि अभी बेर मत बीनना मैं पत्थर मार रहा हूँ। उसने कहा अभी बेर बीन लेने दो फिर पत्थर मारना। मैंने कहा दूर हट जा नहीं तो पत्थर सिर पर गिर जाएगा, पर वह नहीं हटा और बेर बीनता ही रहा। मैंने पत्थर मारने की कोशिश की और अचानक पत्थर उसके सिर पर गिर गया और ख़ून गिरने लगा। पापाजी ने मुझे बहुत डाँटा। दीपू को डॉक्टर के पास ले गए, पट्टी कराई। कुछ दिन बाद वो ठीक हो गया। फिर हमने क्रिकेट खेलने लगे।

□ रघुवीर सिंह देवड़ा, छिदगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

विक्रम सिंह ठाकुर, सातवीं,
तेलसरा, बिलासपुर, म.प्र.

दारखया आट्या वसावे, तीसरी, चिमलखेड़ी,
महाराष्ट्र.

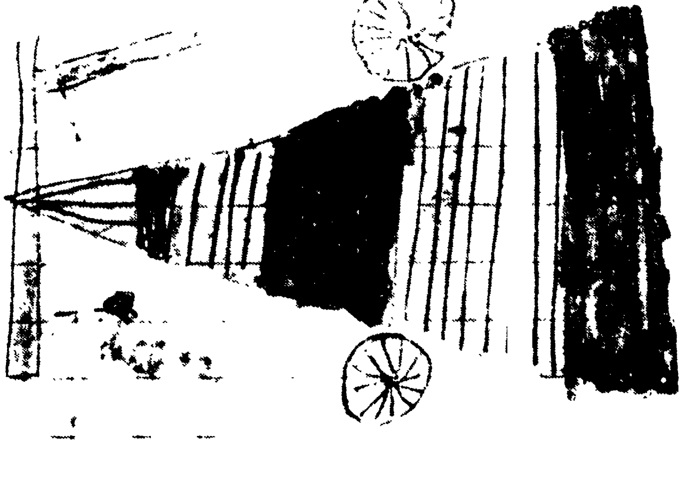

चंद्रशेखर चौधरी, सातवीं, कुड़ाना

मेरा पन्ना

चंदा को लगा बुखार

□ आशीष कुमार साहू, आठवीं, देवरबीजा, दुर्ग, म. प्र.

एक रात चंदा मामा को
ज़ोर का बुखार लगा
दौड़-दौड़कर आ गया
उसका भाई सगा

सूरज दादा देख चंदा को
अकड़-अकड़कर बोले
अगर तुम चाहो तो मैं
बरसाऊँ आग के गोले

कान पकड़कर चंदा बोला
दादू ऐसा न करना
जल जाऊँगा मैं अगर
पड़ेगा आपको रोना

तारा बाबा आए जल्दी
देखे चंदा का हाल
ठिठुर-ठिठुरकर काँप रहा था
धीमी थी उसकी चाल

सिर और गले को उसने छुआ
चेहरे पर थी हैरानी
जल्दी डॉक्टरनी को बुलाया
जो थी उनकी नानी

नानी आई तेज़ चलकर
सुई लगाई एक
जाकर मंदिर में तू
अपना माथा टेक

जब चंदा ने माथा टेका
उड़ गया उसका बुखार
आकाश की सैर पर चल दिया
बादल पर होकर सवार

□ के. रामदास, लोयाबाद, धनबाद, बिहार

चूहा राजा

एक चूहा रहता था हमारे घर में। वह बड़ा चुलबुला था। एक दिन बिल्ली चूहे को ढूँढने लगी और उसने चूहे को अपने पंजे में दबा लिया। फिर मैंने देख लिया और बिल्ली को मारकर भगा दिया। तब से चूहा मेरा दोस्त बन गया।

□ रवीन्द्र सिंह, सातवीं, नामली, रतलाम, म.प्र.

□ कमला, तीसरी, कानपुर, उ. प्र.

नया वर्ष

नया वर्ष था। हम सब लोग खुशी में थे। एक दोस्त दूसरे दोस्त के यहाँ जा–जाकर मिठाई खाता। इस तरह हम लोगों ने एक जुलूस तैयार किया। हम लोगों का जुलूस एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहा था। जो भी रास्ते में या गाँव की गली में मिलता वह उस जुलूस में शामिल हो जाता। हम लोग एक दूसरे के ऊपर रंग छिड़कते अबीर फेंकते। कोई ऊपर चढ़ा अपनी छत से कोई नीचे से। हम लोगों को बहुत ही मज़ा आ रहा था। अचानक एक दोस्त की एक आँख में अबीर पड़ गया। हम चार–पाँच लोग मिलकर उस दोस्त को डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने कहा तुम्हारे दोस्त की एक आँख खराब हो गई है। और उसकी एक आँख जाती रही। मैंने सोचा अगर नया वर्ष इसी तरह मनाया गया तो न जाने कितनी आँख नए वर्ष के लिए ही बस हो जाएँ।

□ मनोज द्विवेदी, छठी, पुरैना, रीवा, म.प्र.

तितली

तुमने देखी एक तितली
रंग बिरंगी और चितकबरी
फूलों के ऊपर उड़ जाती
हर फूल को छूकर जाती
कुतर-कुतर मीठा रस पीती
अपने रंग बिरंगे पंख हिलाती जाती
रस पीकर फिर से उड़ जाती
मुझको बहुत से खेल दिखाती
अगर पास में जाता तो आहट
सुनकर उड़ जाती
वह मुझको बहुत दौड़ाती

□ स्वाति गुहा, तीसरी, दल्ली राजहरा, दुर्ग, म. प्र.

□ चन्द्रपाल सिंह राजपूत, नौवीं,
बीसू खेड़ी, सीहोर, म.प्र.

मेरा पन्ना

गुब्बारे वाली लड़की

एक पेड़ था। वह बरगद का पेड़ था। वह बहुत पुराना पेड़ था। उसके चारों ओर घास थी। एक लड़की रोज़ गुब्बारे बेचने आती थी। वह लड़की उस पेड़ के पास जाकर आराम करती थी। वह जब गाँव में पहुँचती थी तब सभी बच्चे अपने–अपने घर से पैसा लाकर गुब्बारा ख़रीदते थे। और उड़ाते थे। किसी दिन उनके माँ–बाप पैसे नहीं देते थे। वह अपने दोस्त के साथ खेलते थे। वह लड़की किसी–किसी दिन नहीं आती थी। तो सभी बच्चे उसकी राह बैठे–बैठे देखते थे। कहते कब आएगी गुब्बारे वाली लड़की अभी तक नहीं आई।

□ मंदाकिनी, चौथी, कानपुर, उ.प्र.

□ सुषमा ढोक, चौथी, भोपाल, म. प्र.

मेरा नटखट भाई

बात उस समय की है जब मेरा भाई ढाई साल का था। एक दिन मेरी माँ सब्ज़ी बनाने के लिए भिन्डी काट रही थी। पास में बैठा मेरा भाई माँ को एक-एक भिन्डी पकड़ा रहा था। भिन्डी कट जाने पर भिन्डी के ऊपर का बेकार हिस्सा माँ ने कूड़ेदान में डाल दिया और हाथ धोने चली गई। पलटकर जब माँ कटी हुई भिन्डी लेने गई तो वहाँ भिन्डी नहीं थी और बरतन .ख़ाली पड़ा था। माँ चारों ओर भिन्डी ढूँढने लगीं। अचानक उनकी नज़र कूड़ेदान पर पड़ी और उन्होंने देखा, " अरे भिन्डी तो कूड़े में पड़ी है।" माँ को ग़ुस्सा आया और उन्होंने भाई को डाँटते हुए पूछा, "तुमने यहाँ भिन्डी क्यों डाली?"

मेरे भाई ने रोते हुए बड़े भोलेपन से जवाब दिया, "तुमने भी तो भिन्डी कूड़ेदान में डाली थी इसलिए मैंने भी डाल दी।" उसका जवाब सुनकर माँ हँस पड़ी।

□ श्रुति चौबे, तीसरी, इलाहबाद, उ.प्र.

दो भेड़

एक घर था। उसमें तीन लोग रहते थे उनके यहाँ दो भेड़ थे। दोनों में बड़ी मित्रता थी। एक दिन दोनों घास खाने गए। एक जल्दी–जल्दी खा रहा था और दूसरा धीरे–धीरे ख रहा था। पहले जो जल्दी खा रहा था उसका पेट भर गया। उसने कहा, "चलो।"

जो धीरे–धीरे खा रहा था उसने कहा, "थोड़ी देर रुको।"

तब पहले ने फिर कहा, "चलो।"

दोनों घर की ओर जा रहे थे। तभी एक आदमी उधर की ओर घास लिए जा रहा था। दूसरे ने कहा, "चलो उसके ऊपर चढ़ जाएँ। फिर मैं अपनी भूख शान्त करूँगा, तुम उसको डराना।"

पहले ने कहा, "चलो।"

दोनों मिलकर आदमी की ओर चले। पहले ने आदमी को डराया और दूसरा आदमी के ऊपर चढ़ गया और घास खाने लगा। जब दूसरे ने कहा, "चलो भागो।" दोनों भागने लगे। उनके पीछे वह आदमी भी भागने लगा। घर पहुँचकर उसने घरवाले से कहा। घरवाले ने कहा, आप इन दोनों को चाहें जितना मारे।

उस आदमी ने पहले भेड़ से पूछा, "तुम दोनों ने मेरी घास खाई है मैं तुम्हें बहुत मारूँगा।"

पहले ने कहा, "मैंने कुछ नहीं किया।"

तब वह आदमी दूसरे भेड़ के पास गया। दूसरे ने कहा, "मुझे बड़ी भूख लग रही थी।"

वह आदमी चला गया। उसके घर वालों ने दोनों को खाना नहीं दिया। पन्द्रह दिन बाद दोनों भेड़ मर गए।

चित्र एवं रचना □ हरी बाबू, चौथी, कानपुर, उ.प्र.

मेरा पन्ना

तोता

मेरे घर एक तोता है,
वह बहुत ही सुन्दर है।
उसकी मीठी वाणी मुझको
बहुत प्यारी लगती है।
कुत्ता बिल्ली को देखकर,
वह पंख फड़फड़ाने लगता है
खाना उसको न मिलने पर
वह हम पर गुर्राता है
खाना खाकर फिर वह
गुट्टी-गुट्टी चिल्लाता है

☐ सुनीता बौरासी, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

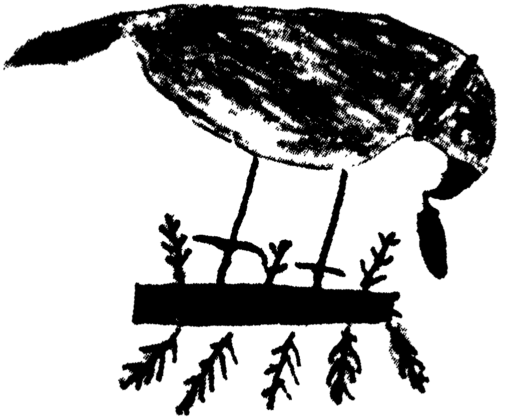

☐ चंचल एवं सीमा, पाँचवीं, बिल्लोद, मन्दसौर, म.प्र.

दुर्घटना

एक बार मैं मेरे दोस्तों के साथ घूमने के लिए जंगल में गया था। तो वहाँ एक सूमर ने डकारा। तो हम सब चौंक गए और मेरे दोस्तों ने कहा की अपन सब भाग चलें। तो मैंने कहा कि मैंने अभी तक सूमर नहीं देखा। अपन पहले सूमर देख लें और फिर अपन भाग लेंगे।

मेरे दोस्तों ने कहा की सूमर अपन सबको खा जाएगा। मैंने कहा कि अपन झट पेड़ पर चढ़ जाएँगे। तो मेरे दोस्तों ने कहा कि हाँ। हम सब झाड़ पर चढ़ गए और नाले में से सूमर निकला। हम सब चुपचाप झाड़ पर लटके रहे और सूमर निकल गया। हम सब झाड़ पे से उतरकर भाग लिए।

☐ दीनदयाल गौर, भादूगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

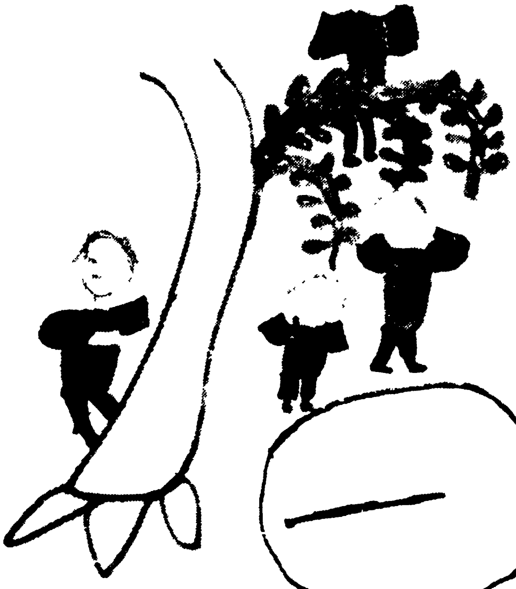

☐ सत्यनारायण सिंह चौहान, नौवीं, मांदला, होशंगाबाद, म.प्र.

मामाजी का पीपा

घटना उस समय की है जब मैं सातवीं कक्षा में पास के गाँव के स्कूल में पढ़ता था। सावन का महीना था। हम पाँच – छः लड़के स्कूल से घर लौटने के लिए बस का इंतज़ार कर रहे थे। बस में काफी भीड़ थी। अतः हम लोग बस की छत पर चढ़ गए। वहाँ एक पीपा रखा था। मैं उसे खोलने लगा। मेरे सहपाठी शिवपूजन ने मना किया। ''किसी का सामान छूना गलत है।'' पर मैं उसे डरपोक समझकर खिल्ली उड़ाने लगा। पीपा खोलकर हम ने फल मिठाई का आनंद लिया। पर शिवपूजन ने साफ़ मना कर दिया। फल खाने के बाद हम ने छिलके डब्बे में डाल दिए। तथा बस स्टैण्ड आने के पहले उतर गए। घर पहुँचकर मैं हाथ मुँह धोकर खाना खाने बैठा ही था कि वही पीपा लिए मेरे मामाजी आ गए।

उन्हें देखकर मैं थोड़ा सहम गया और कुछ न बोला। मेरे साथ आए शिवपूजन ने मेरी सारी पोल खोल दी और पीपे के अंदर छिलके होने का राज़ बता दिया।

□ कृष्ण कुमार साहू, रमतला, बावली, बिलासपुर, म.प्र.

बस्ता

□ अनुज चौहान, दूसरी, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

इतना वज़नदार है बस्ता
दिखता न अब स्कूल का रास्ता
हो जाती है हालत खस्ता
छुट्टी का दिन ही है सबसे सस्ता
रविवार तो है गुलदस्ता
बाकी दिवस पैर है धस्ता
अगर न हो बस्ता से वास्ता
तो न होती सहनी यह दासता
छोटा बच्चा हरदम हँसता
बड़ा हुआ बस्ते में फँसता
अगर न पाला बस्ता से टसता
तो न मैं अपनी कमर कसता
वाह रे बस्ता वाह रे बस्ता

□ कुलदीप यदु, नौवीं, चंदखुरी, रायपुर, म.प्र.

मेरा पन्ना

थोड़ी थोड़ी ठण्ड

थोड़ी थोड़ी ठण्ड अब आने लगी
चुपके से घर में समाने लगी
लोगों को .खूब कँपाने लगी
गुदड़ी से रज़ाई हमें भाने लगी
टी.वी. विज्ञापन बरसाने लगी
क्रीम, पाउडर बिकवाने लगी
पैसों का .खर्च बढ़ाने लगी
सबको यह समझाने लगी
जो डरा उसे डराने लगी
थोड़ी थोड़ी ठण्ड अब आने लगी

□ **रूपेश अग्रवाल, सातवीं, जावर, खण्डवा, म. प्र.**

मुक्त गगन

मस्त पवन में, मुक्त गगन में,
पंछी बन उड़ जाऊँ,
आज मन में, अपने चमन में
सबको मीठी तान सुनाऊँ
मोर-पपीहा-कोयल-मैना
सबसे सुन्दर मैं कहलाऊँ
बनके पंछी सभी वनों की
सैर मैं कर आऊँ
आसमान को छू आऊँ
सबके मन को मैं भाऊँ
मस्त पवन में, मुक्त गगन में
पंछी बन उड़ जाऊँ।

□ **ज़रीना मुश्ताक, भोपाल, म. प्र.**

दाल फोकट

एक बार मैं और मेरा दोस्त रवि स्कूल जा रहे थे। एक दुकान थी उस पर लिखा था "चार रुपए पाव पुड़ी, दाल फोकट"। हमने सोचा जेब में तो फूटी कौड़ी नहीं है पर दाल फोकट है। हमने दाल पी ली। अब मुनीम ने पैसे माँगे तो हमने कहा हमने पुड़ी नहीं खाई हमने तो दाल पी है और दाल फोकट है। उसने कहा कि पाव पुड़ी के साथ दाल फोकट है। हमने सोचा अब तो फँस गए। फिर उसने रवि को पकड़ लिया और मुझसे कहा कि घर जा और चार रुपए लेकर आ, नहीं तो रवि को नहीं छोड़ेंगे। मैं घर गया और चार रुपए लिए और मुनीम को दे दिए। और हमने पाव पुड़ी भी ले ली और हम उसके बाद कभी उस दुकान पर नहीं गए।

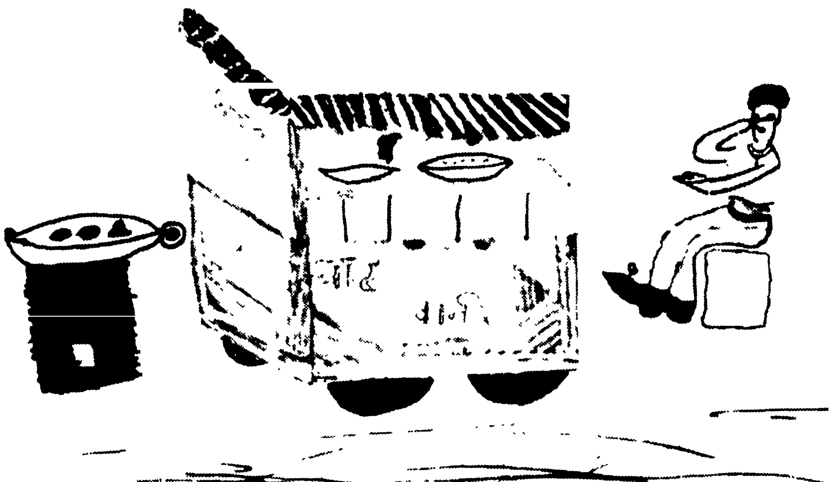

□ **सतीष चौहान, सातवीं, टोंकखुर्द, देवास, म. प्र.**

□ **पंकज कुमार पोरवाल, बालागुड़ा, मन्दसौर, म. प्र.**

मेरे पैसे वापस मिले

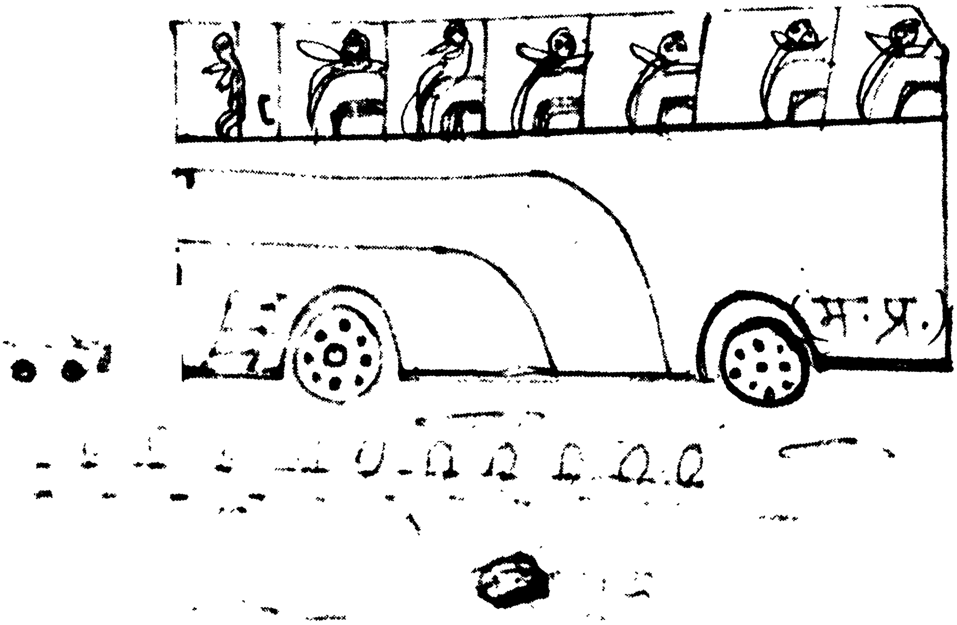

❑ डोलामणी भोई, आठवीं, टेंगनापाली, रायपुर, म. प्र.

मैं अभी–अभी दिनाँक 18–5–96 को मध्यप्रदेश परिवहन की सरकारी बस पकड़ने के लिए स्टेशन आया। मैं अकेला था इसलिए मेरे बड़े भैया दुर्ग बस डिपो तक छोड़ने आए। हमें दुर्ग से अम्बिकापुर आना था। बस 6 बजे शाम को डिपो से खुलती थी। शाम 5.30 बजे सभी यात्री अपनी–अपनी टिकट लेने के लिए लाईन में लग गए। मगर मेरे भैया को टिकट नहीं मिला, उन्होंने कहा कि तुम्हारा टिकट काउन्टर पर से नहीं कटा, पूछने पर बोला कि बस में कण्डक्टर से कटवा लेना। बस 6 बजे डिपो में आकर लग गई। सभी यात्री अपने टिकट नम्बर से सीट खोजकर बैठ गए। अभी मेरा टिकट नहीं कटा था इसलिए मैं पीछे की सीट में बिना नम्बर का बैठ गया।

बस खुलने से पाँच मिनट पहले मेरे भैया ने मुझे बुलाकर कण्डक्टर से पहचान करा दी। बोले इस लड़के का हाफ टिकट बस में दे दिजिएगा। मैं अकेला था इसलिए मेरे भैया ने कण्डक्टर से पहचान करा दी। बस खुलने पर कण्डक्टर ने टिकट नहीं कटाने वालों से पैसे माँगे। मेरे भैया ने बस खुलने से पहले हमें डाल्टनगंज तंक का हाफ टिकट का पैसा सौ रुपए दिए थे। मैं कन्डक्टर से बोला, भाई साहब मुझे अम्बिकापुर तक का 50 रुपए हा.फ़ टिकट काटकर पैसे वापस दे दीजिए। क्योंकि मुझे अम्बिकापुर से फिर सुबह 6 बजे डाल्टनगंज के लिए टिकट लेना होगा। इस पर कन्डक्टर कुछ नहीं बोला और हमें हाफ टिकट दे दिया। जब मैं थोड़ी देर के बाद पैसे माँगने गया तो इस पर कन्डक्टर ने मुझसे झूठ बोला कि मैं तेरा फुल टिकट काट दिया हुँ। इस पर मैं घबरा गया। मैंने बोला भाई साहब मेरे भैया और मैंने भी आपसे, टिकट काटने से पहले, हा.फ़ टिकट माँगा था फिर आपने फुल क्यों दे दिया। इस पर कन्डक्टर ने मुझे डाँट दिया और कहा मैं क्या करूँ, मैं घर से थोड़े दूँगा।

मैं चुपचाप सीट पर आकर उदास होकर सोचने लगा। अब मैं घर कैसे जाऊँगा। मुझे नींद आ गई, मैं सोया था इतने में गाड़ी अचानक रुक गई। मेरी नींद खुल गई देखा आगे जीप खड़ी थी और सभी का टिकट चैक हो रहा था। फिर मेरी बारी भी आई। मैंने अपना टिकट दिखाकर चैक करने वाले ऑ.फ़ीसर से सारा हाल कह दिया। उन्होंने मेरा टिकट देखा और कण्डक्टर से मेरे पैसे वापस दिला दिए और कण्डक्टर को बदले में ख़ूब डाँट पड़ी। ये ऑ.फ़ीसर टिकट चेकर मोबाइल थे।

❑ अली असगर खाँ, चौदह वर्ष, डाल्टनगंज, बिहार

मेरा पन्ना

त्यौहार

त्यौहार हम सबका है त्यौहार
सब लोग हैं इसे मनाते
त्यौहार के दिन हैं मिठाई खाते
हम सब पटाखे बजाते
दीवाली का त्यौहार जब आता
रक्षा बन्धन कितना प्यारा
यह त्यौहार है कितना न्यारा

□ कमला राना, तीसरी,
कानपुर, उ.प्र.

□ चैती कनमड़ीकर, सात वर्ष, भोपाल, म. प्र.

चाँद-तारे

भैया नील गगन में ये तारे क्यों हैं लटके
जब भी देखूँ इनको बात मुझे यह खटके
जो ये गिर जाते ऊपर से इनको लेता उठा
अपने नन्हे खिलौनों में शामिल कर लेता
मैंने कैसे खिलौने सजाए, मित्रों को कहता
चाँद गिरे तो घर की दीवार पर लटका देता
घर को अपने सजाता दूसरों से हटकर
भैया नील गगन में ये तारे क्यों हैं लटके
जब भी देखूँ इनको बात मुझे यह खटके
माँ बोली ये सब है गुरूत्वाकर्षण से ऊपर
गिर नहीं सकते यह सब कभी इस धरती पर
गिरें जो इस धरती पर तो भूचाल आ जाए
हम सब धरती के अन्दर समा जाएँ
सुनकर यह बातें मुन्ना बहुत घबराया
नहीं चाहिए तारे मुझको बहुत खिलौने पाया
मम्मी से बोला वह, रहना इनसे बचकर
भैया नील गगन में ये तारे क्यों हैं लटके
जब भी देखूँ इनको बात मुझे यह खटके

□ गणपत लाल, आठवीं, फालना, राजस्थान

पहेलियाँ

(1)

गरदन है पर सिर नहीं
हाथ है पर उँगली नहीं
कमर है पर पैर नहीं

(2)

पंख पसारे दोनों ओर
ऊपर नीचे करता शोर
ऊपर नीचे करता पार
पैदल चलता बाकी संसार

□ विजय लक्ष्मी गेन्डरे, दसवीं,
बधेरा, रायपुर, म.प्र.

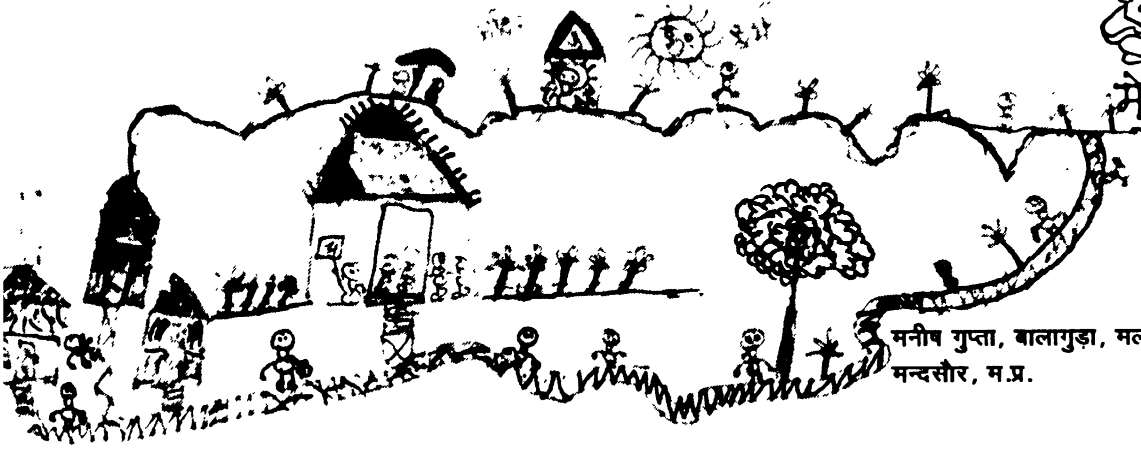

मनीष गुप्ता, बालागुड़ा, मल्हारगढ़,
मन्दसौर, म.प्र.

नज़मा बी, दस वर्ष,
हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

डुगंर सिंह परिहार, छठवीं, भाड़खा, बाड़मेर, राजस्थान

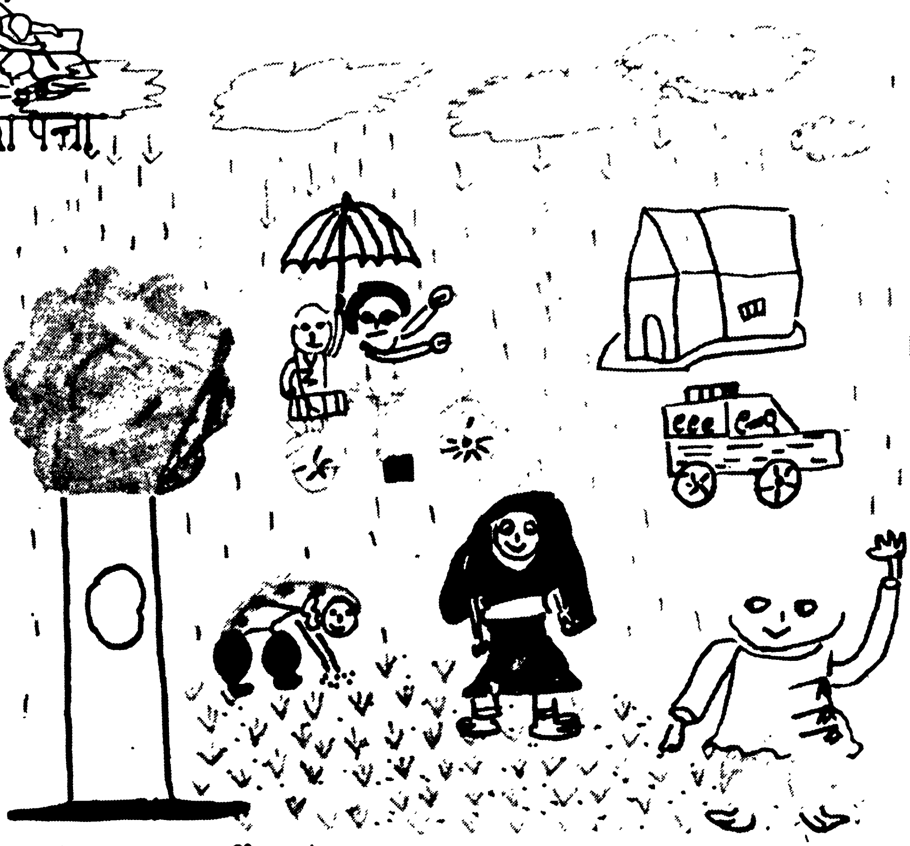

देवयानी अग्रवाल, आठवीं, कानोड़, राजस्थान

आनन्द सिंह, नौवीं, लोढ़ारा, रायगढ़, म.प्र.

आम के भूत

हमारे गाँव के पास ही ऊँची–ऊँची डालियों वाले आम के पेड़ों का बगीचा है। आम के मौसम में दिन भर हमारे जैसे लड़कों की भीड़ बगीचे में लगी रहती है। गाँव के सयाने लोग दिन भर काम में लगे रहने के बाद रात को प्रकाश लेकर आम बीनने जाते हैं।

विक्रम सिंह लाहोरी, पाँचवी

एक दिन मैं भी रात को अपने पापा के साथ बगीचे गया। वहाँ बहुत से लोग प्रकाश लेकर पके आम ढूँढ रहे थे। अचानक भयानक आवाज़ के साथ ज़ोर–ज़ोर से किसी आम की डाली के हिलने की आवाज़ आई। सभी लोग डर गए। और भूत के भय के कारण आवाज़ को भूत समझकर बगीचे से भागे। पूरे गाँव में बगीचे के भूत का शोर फैल गया। कुछ लोग चौराहे पर भूत की चर्चा कर रहे थे तभी एक आदमी सिर पर आम से भरी टोकरी लिए अपने घर की तरफ जा रहा था। लोगों ने उसे पकड़ लिया डराने धमकाने लगे। वह आदमी डर गया और बताया कि मैं ही भयानक आवाज़ के साथ ज़ोर–ज़ोर से आम की डाली हिलाता था। जिससे सभी लोग भूत के डर से चले जाएँ। और मैं अकेले पूरे बगीचे का आम बीन सकूँ। अब मैं समझ गया कि भूत ऐसे होते हैं। और मेरा भूत से भय हट गया।

□ अंकेश पटेल, तीसरी, खड्डा, शहडोल, म.प्र.

पहेलियाँ

(1)

तन में है काला पानी
कलम कहे मुझको नानी
प्रथम कटे तो वायु कहलाऊँ
अंत कटे तो रोग भगाऊँ?

(2)

जंगल है पर जानवर नहीं
पानी है पर मछली नहीं
बादल है पर चाँद तारे नहीं
बोलो वह क्या है?

(3)

सारी जाली जल गई
जला न कोई धागा
जल वाले जाल में रहे
जल खिड़की से भागा

□ वीरेन्द्र कुमार यादव, बिलासपुर, म.प्र.

मेरा पन्ना

चिड़िया

चीं-चीं करती चिड़िया आई
चावल का दाना चिड़िया लाई
थी वो थोड़ी सी घबराई
उसने देखी एक परछाई
जाकर बैठी दूर एक पेड़ पर
सोच रही थी परछाई देखकर
उसे लगा कोई उसे पकड़ने आया
लेकिन न था वो किसी का साया
अब वह किसी से नहीं डरती
मुसीबत आने पर हिम्मत से वह लड़ती

□ योगिता अमोल्या, छठवीं, खण्डवा, म.प्र.

हे ईश्वर

मेरी इतनी विनती सुनिए जी
एक बार मेरी जगह
छात्र बनकर देख लीजिए जी
मन-मन भर के बस्ते
कंधे पर टाँगकर, खाकर ठोकर
छूट जाएँगे छक्के जी
पास होने के लिए लगवाना पड़ेंगे
ट्यूशन के धक्के जी
गणित विज्ञान रटते-रटते
याद आएगी नानी जी
भूल जाएँगे स्वर्ग की
मस्ती भरी कहानी जी

□ सोनु चौहान, आठवीं, धार, म.प्र.

□ कुमारी प्रीति, आठवीं, लुनेरा, रतलाम, म. प्र.

फूल

एक था फूल खिल-खिलाया
कि लू लगी वह मुरझाया
गुस्से में मालिक ने तुड़वाकर फिंकवाया
तो मैंने उसे सड़क पर पाया
मैंने घर ले जा उसे रख दिया
वह सूख गया
मैंने उसका बीज डाला
वह उग आया
फिर लगा खिल-खिलाने
और मुझे देखकर मुस्काया
फिर उसका रंग था चटकार
अब न सुननी पड़ी उसे फटकार
आज भी जब उस घटना को याद करता है
उदास हो जाता है
वह आज भी है खिल-खिलाया
देखकर उसने मुझे हमेशा है मुस्काया

□ नाहिद खान, पाँचवीं, नर्मदा नगर, खंडवा, म. प्र.

□ राज अभिषेक, डुमराँव, बिहार

मेला

मेरे गाँव का मेला
लगता है अलबेला
कहीं झूला कहीं चकरी
तान खड़ा कोई छतरी
खा रहा रामू केला
मेरे गाँव का मेला
देख बंटी गुड्डू गुड्डी
.खूब मुस्कराती
श्यामू से माँगकर
कुल्फी ही खाती
रामू झूल रहा झूला
चुप्पी साध खड़े पापा
देख रहे तमाशा
मेरे गाँव का मेला
लगता है अलबेला

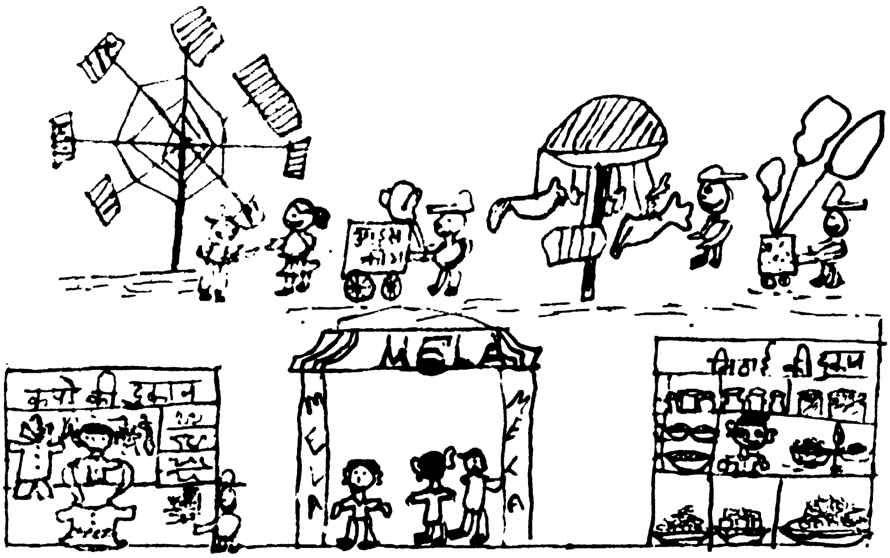

□ विनोद प्रजापत, दसवीं, उज्जैन, म.प्र.

□ सोनू चौबे, सातवीं, चाँदबड़, भोपाल म. प्र.

पेड़

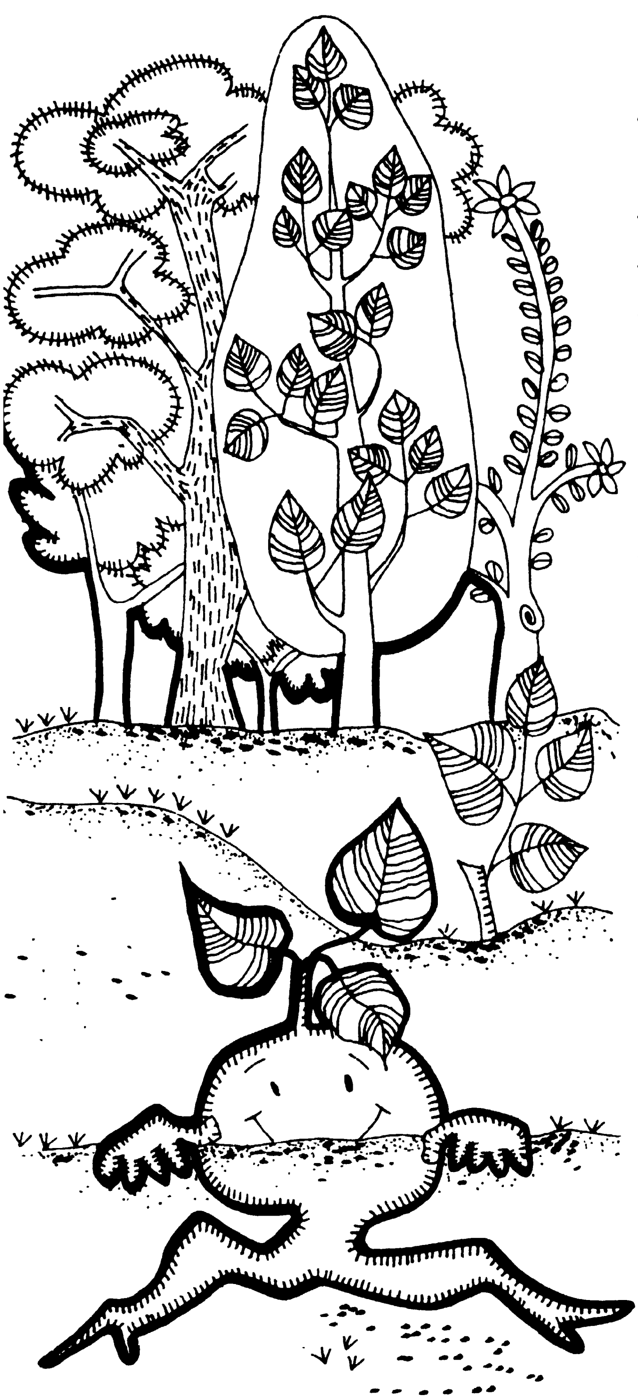

बीज हज़ारों
आँखें मीचे
नम मिट्टी की
चादर ओढ़े
महटियाए से
अपने बिस्तर में पड़े
हुए हैं।

कान पकड़कर
सूरज जब
हौले से धकियाएगा
हड़बड़ करते भागेंगे,
मंजन कर
चाय पिएँगे
धरती के रोशनदानों से
चोरी चोरी झाँकेंगे
हरे सूट में
भौंचक्के से
एक नई दुनिया
पहचानेंगे।

हवा कहेगी झूम-झूम
वे रुमझुम-रुमझुम नाचेंगे
थक जाएँगे,
पोंछ पसीना
पानी पीकर

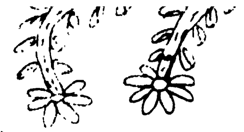

भरी धूप में
पत्तों की थाली से
खाना खाएँगे

फिर खेलेंगे
चिड़ियों के संग
तोतों से
चोंच लड़ाएँगे
पीठ खुजाएगी गइया
बच्चे छाँव में खेलेंगे।

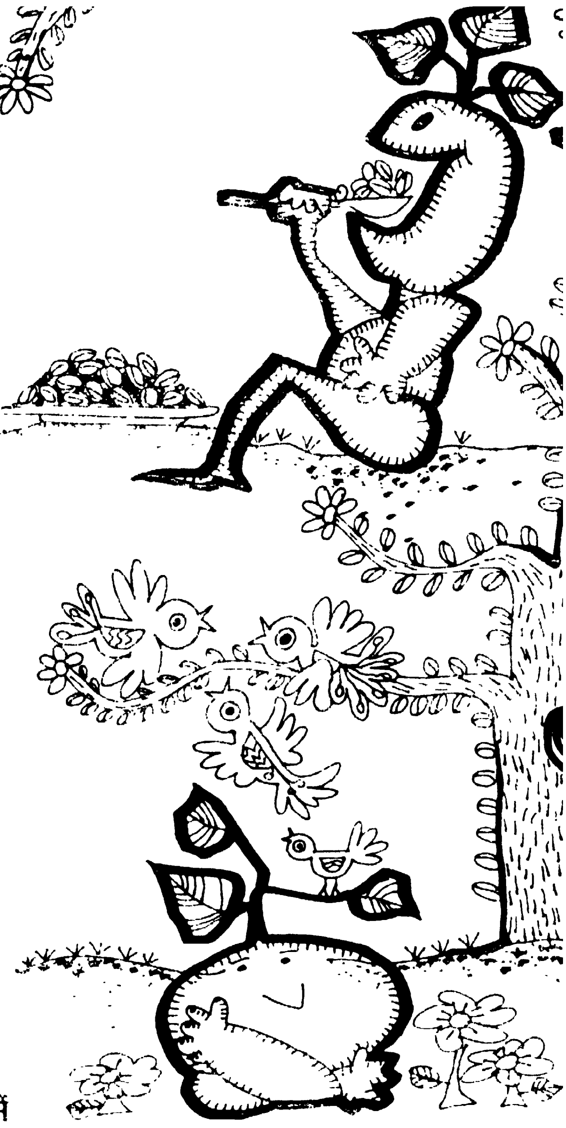

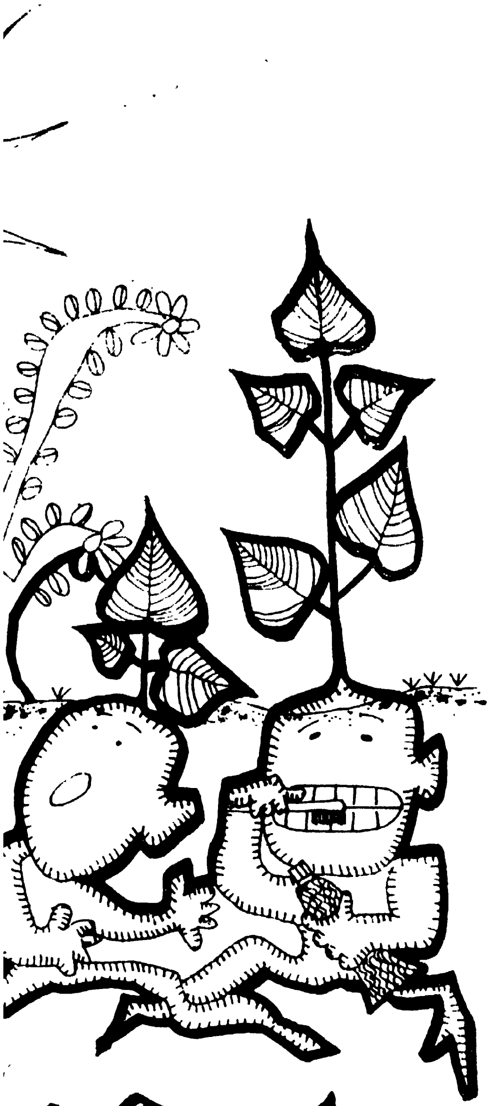

धीरे-धीरे धूप ढलेगी
शाम सजेगी
पंछी घर को लौटेंगे
सुख-दुख के क़िस्से
बतियाकर
लम्बी चादर तानेंगे

चंदा चमकेगा
तारों की जगर-मगर में
जुगनू की लपर-झपर में
सभी पेड़
सो जाएँगे
हरी भरी धरती के
सुन्दर सपनों में
खो जाएँगे।

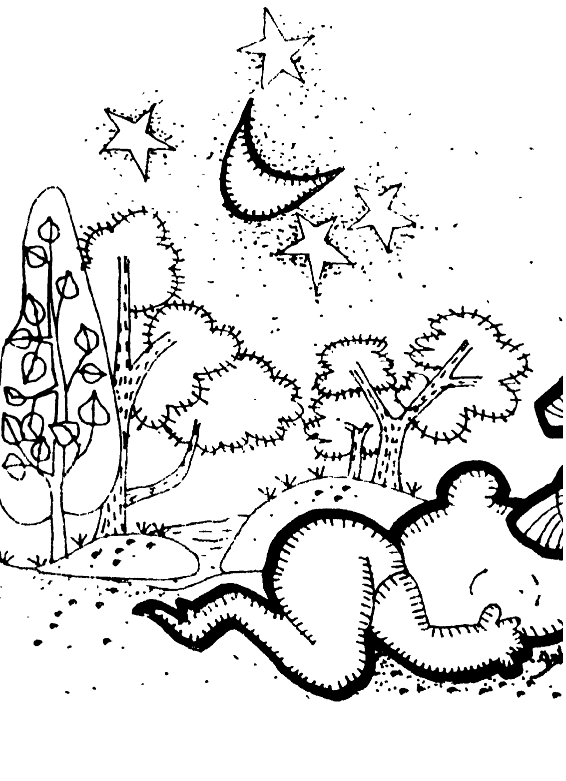

❑ विजय गुप्त
चित्र : सबीना सबरवाल

चूहा और बिल्ली

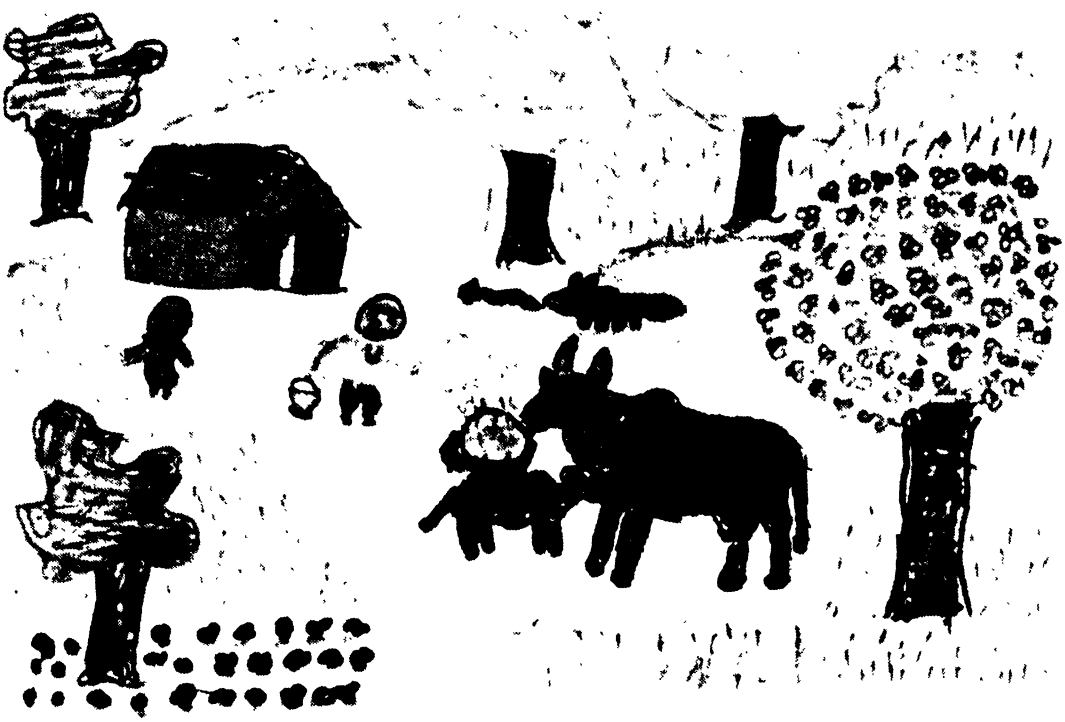

□ सुबोध साकल्ले, सातवीं, भादूगाँव, होशंगाबाद, म. प्र.

एक अनाज के गोदाम में दो चूहे रहते थे। भूरा चूहा और सफ़ेद रंग का चूहा। दोनों की मित्रता थी और एक ही बिल में रहते थे। हँसी–हँसी खाते थे और हँसी–हँसी ही अपना जीवन बिताते थे। एक दिन उस अनाज के गोदाम में सफ़ेद चूहा अनाज खा रहा था। उस दिन एक बिल्ली आई और उस सफ़ेद चूहे को पकड़ लिया। भूरे रंग का चूहा सोचता है कि मेरे मित्र को पकड़ लिया है वह उसे खा जाएगी मैं अकेला रह जाऊँगा। सब साथी सोचेंगे कि मैं अपने मित्र को मौत के मुँह में जाने से रोक नहीं सका। ऐसा सोचकर भूरे चूहे ने बिल्ली से कहा, "ऐ बिल्ली, मेरे मित्र को आप छोड़ दीजिए।"

बिल्ली ने सोचा कि मेरा दिन भर का खाना है। कहा कि, "मैं बड़ी मेहनत से पाई हूँ कैसे छोड़ सकती हूँ।" चूहा बोला, "मैं अकेला कैसे रह सकता हूँ। मेरे साथी मुझे बहुत डाँटेंगे मैं कैसा करूँ।" बिल्ली बोली, "मेरा पेट भरने के लिए तुम दूध ले आओ।"

भूरा चूहा गाय के पास गया। उसने गाय से कहा, "गाय मुझे दूध दे दो।" ऐसा कहकर भूरे चूहे ने अपनी सारी बात बता दी। गाय ने कहा, "मैं अभी दूध देने लायक नहीं हूँ, जब मैं घास खाऊँगी तब मैं दूध देने लायक हो जाऊँगी। तुम मुझे घास खिलाओ मैं तुम्हें दूध दूँगी।"

चूहा दौड़ता हुआ किसान भाई के पास गया। चूहे ने उसे सारी बात बता दी। किसान ने कहा, "मैं तुम्हें घास नहीं दे सकता। मैं भूखा हूँ मेरा परिवार भूखा है इसलिए में तुम्हें घास नहीं दे

सकता।" चूहा बोला, "अब मैं क्या करूँ।" किसान ने कहा, "तुम मुझे अनाज लाकर दो तो मैं तुम्हें घास दूँगा।"

चूहा दुकानदार के पास गया। दुकानदार से कहा, "भाई दुकानदार मुझे अनाज दो।"

दुकानदार ने कहा, "मैं तुम्हें अनाज तो दे दूँगा, मगर किस लिए।"

चूहा बोला, "मेरे मित्र को बिल्ली ने पकड़ लिया है वह उसे खा जाएगी। बिल्ली कहती है कि तुम मुझे दूध दो तब मैं तुम्हारे साथी को आज़ाद करूँगी। तब मैं गाय के पास गया। गाय को दूध देने के लिए कहा। गाय ने कहा तुम मुझे घास खिलाओ तब मैं दूध दूँगी। मैं झट से किसान भाई के पास गया। किसान भाई को अपनी बात बतला दी। किसान बोला मैं भूखा हूँ और मेरा परिवार भूखा है। तुम मुझे अनाज दो तब मैं घास दूँगा। तब मैं तुम्हारे पास आया।"

दुकानदार ने कहा, "मैं तुम्हें अनाज तो दे दूँगा। लेकिन तुम्हें एक काम करना होगा।" चूहा बोला, "क्या काम करना होगा।" दुकानदार बोला, "मेरे अनाज के बोरे को फाड़कर बहुत से चूहे खा रहे हैं। तुम उन चूहों को यहाँ से ले जाओ। यह काम तुम कर सकते हो। तब मैं तुम्हें अनाज दूँगा।" भूरे चूहे ने अनाज ले लिया और अन्दर जाकर कहा, "आओ मेरे मित्र आओ सब लोग मेरे घर चलो। मैं एक अनाज के गोदाम में रहता हूँ। तुम लोग वहाँ बड़ी खुशी से रहोगे।" चूहे को अपने मित्रों को देखकर बड़ी खुशी हुई और वह सब चूहों को ले गया। भूरे चूहे ने किसान भाई को अनाज दिया। किसान भाई ने घास काटकर दिया। चूहा घास लेकर गाय के पास गया। गाय ने दूध दिया। चूहे ने दूध बिल्ली को दिया। बिल्ली ने सफ़ेद चूहे को आज़ाद कर दिया। बिल्ली दूध पीकर चली गई।

सफ़ेद चूहा भूरे चूहे से बोला, "मित्र मैं तेरा अहसान कभी नहीं भूलूँगा।" दोनों फिर खुशी खुशी जीवन बिताने लगे।

□ जगदीश प्रसाद साहू, सातवीं, गिधपुरी, रायपुर, म.प्र.

□ चेतन कुमार राकाँ, बारह वर्ष, बदनावर, म. प्र.

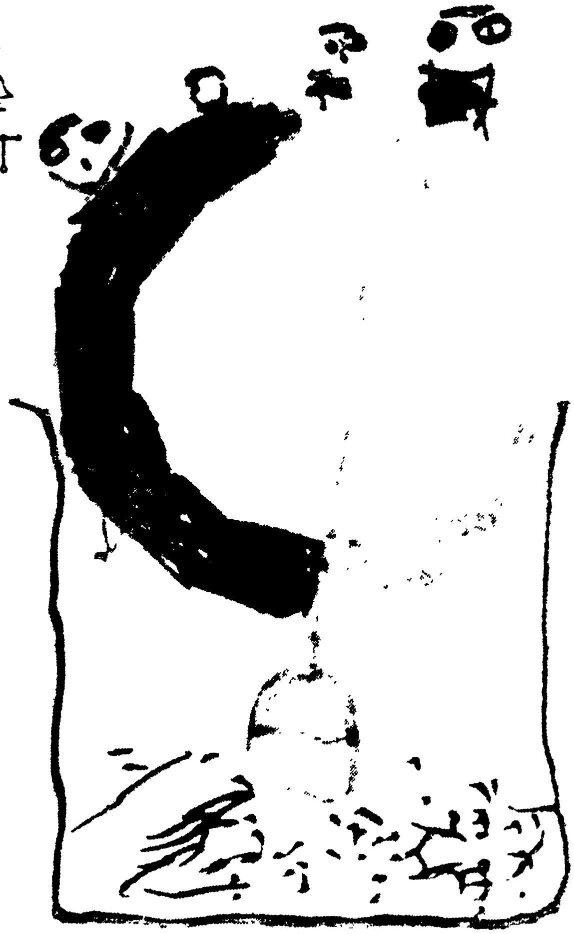

□ रामावतार, सातवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

कुआँ

कुआँ हमको पानी देता
बदले में वह कुछ न लेता
पानी सबकी प्यास बुझाया
खेतों को हैं सींचा जाता
है इक कुआँ हमारे पास
पानी का स्रोत जो .खास
पहले इस पर रहट था चलता
फिर तो पम्प से पानी निकलता
आज है गाँव में बिजली आई
इस पर हमने मोटर लगवाई
झट से जाकर बटन दबाएँ
पानी में हम खूब नहाएँ

□ गुरमीत सिंह सिक्ख, गढ़ी बारोद,
शिवपुरी, म.प्र.

चोरी पकड़ी गई

एक दिन हम तीनों दोस्त साथ बैठे थे। हम सोच रहे थे कि अपने मोहल्ले में गणेश जी बिठाएँगे। अभी गणेश जी बैठने में दो दिन बाक़ी थे। गणेश जी का बैठने का दिन आया, हमने भी गणेश जी की स्थापना की। दोपहर आई तो हम दूसरे कमरे में केरम खेलने लगे। एकाएक गणेश जी के पास का पर्दा हिलने लगा। हमने जाकर देखा तो हमारा एक दोस्त अमित केले व लड्डू खा रहा था। हमने उसे पकड़ा और उसकी मम्मी के पास ले गए। उसकी मम्मी ने उसे ख़ूब पीटा और हमें बड़ा मज़ा आया।

□ विजय सिंह चौहान, छटवीं,
टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

□ अनिल कुमार राय, खिमलासा, सागर, म. प्र.

मेरा पन्ना

राखी महँगी पड़ी

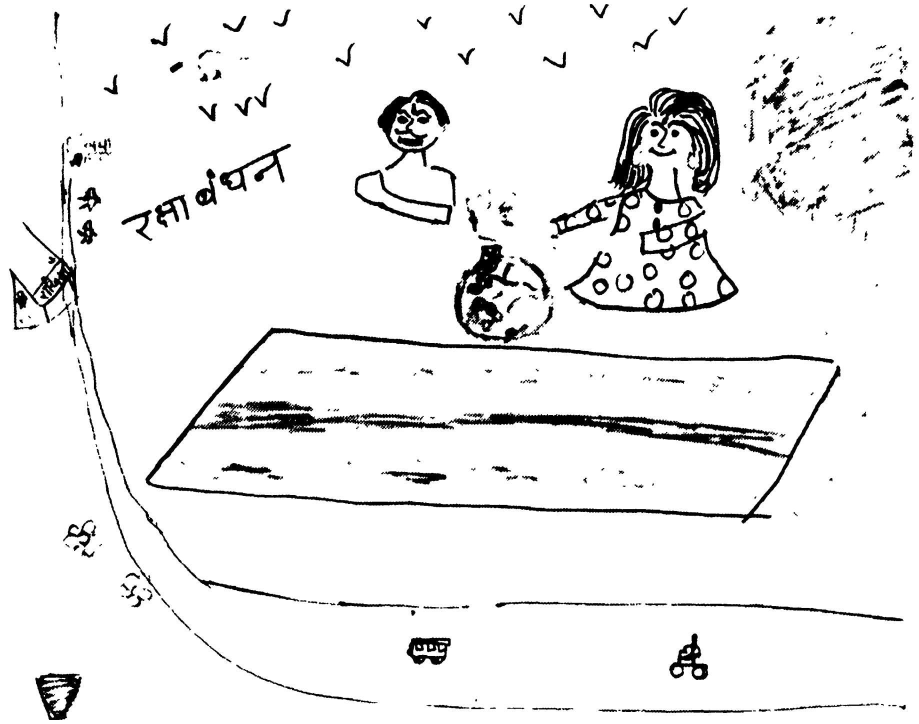

□ ऋचा शर्मा, उज्जैन, म.प्र.

रक्षाबंधन का त्यौहार आया। मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि मैं आज अपने गाँव जाकर अपने भाइयों को राखी बाँधूँगी। मैं और मेरे पिताजी गाँव के लिए रवाना हुए। जौरा से हमारा गाँव पाँच किलोमीटर दूर है। जैसे ही हम जौरा पहुँचे बारिश ज़ोर से शुरू हो चुकी थी। तीन दिन से लगातार पानी गिर रहा था। इस टाइम सब जगह पानी ही पानी दिख रहा था। हम लोग जौरा बस स्टैंड पर उतरे। वहाँ का हाल देखकर मेरे पिताजी ने कहा कि यहाँ तो बहुत पानी है और कोई बस भी नहीं आ रही है। इसलिए हम वापस मुरैना चलते हैं। लेकिन मैंने पिताजी को मना ही लिया। हम लोग गाँव पैदल ही चल पड़े। रास्ते में बहुत फिसलनी मिट्टी थी इसलिए मैं कई बार फिसली। लेकिन वहाँ कमर तक पानी था। आख़िर हम गाँव पहुँच ही गए। वहाँ पहुँचकर मैंने अपने भाइयों को राखी बाँधी। मेरी इच्छा पूरी हो गई मैं कहने लगी, राखी महँगी पड़ी।

□ वर्षा श्रीवास्तव, चौथी, मुरैना, म.प्र.

गुड़िया रानी

गुड़िया रानी
गुड़िया रानी
तुम हो कितनी अच्छी
बात-बात पर गुस्सा होतीं
जैसे तुम हो मेरी नानी।

□ लक्ष्मी सिंह, चौथी, कानपुर, उ.प्र.

साइकिल वाला

मैं स्कूल जा रही थी। सड़क से एक और लड़की जा रही थी। एक साइकिल वाला आ रहा था। देख न पाई तो उस लड़की पर साइकिल चला दी। फिर उसके पिता ने बहुत मारा उसे।

□ स्मिता पाण्डेय, तीसरी, सतना, म.प्र.

मेरा पन्ना

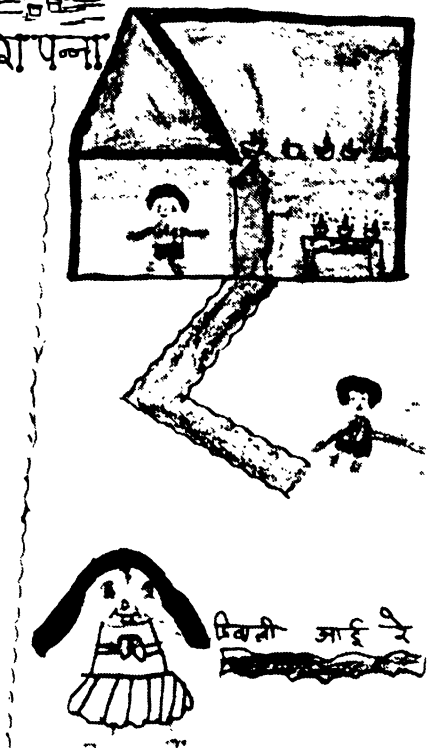

रेनु शर्मा, भोपाल, म.प्र.

महवीश, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

कीर्ती चौहान, आठ वर्ष, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

तोप

आज के ज़माने की तोप कैसी होती है, पता नहीं। पर पहले के ज़माने की तोप के चित्र तो तुमने देखे होंगे। शायद किसी फ़िल्म में इन्हें चलते हुए भी देखा होगा। तोप का गोला आगे की ओर छूटता है और साथ-ही-साथ तोपगाड़ी ख़ुद थोड़ा-सा पीछे की ओर लुढ़क जाती है। ऐसी ही एक तोपगाड़ी बनाने की जुगाड़ है इस बार। इसके लिए ज़रूरत होगी लकड़ी के एक आयताकार पटिए, तीन कील, एक हथौड़ी, एक रबरबैण्ड, कुछ धागा और माचिस की। गोले के लिए एक छोटा-सा गोल पत्थर या काग़ज़ का गोला। हाँ, इस गाड़ी के चक्के के रूप में या तो पतली बेलनाकार डिब्बियाँ या गोल पेंसिल का इस्तेमाल किया जा सकता है।

इसे बनाना बहुत ही आसान है। लकड़ी के पटिए पर चित्र में दिखाए तरीक़े से तीनों कील गाड़ लो। दो पास-पास और एक अलग से। फिर रबर बैण्ड को दोहरा पकड़कर बीच में धागे से गठान बाँध लो। गठान ऐसे बाँधना कि धागे का एक फन्दा बन जाए। रबर बैण्ड के दोनों गोल फन्दे वाले छोर पास-पास वाली कीलों में फँसा दो। फिर धागे के फन्दे को खींचकर तीसरी इकलौती कील में फँसा दो। पटिए समेत इस पूरे इंतज़ाम को दो गोल पेंसिलों या पतली बेलनाकार डिब्बियों पर रख दो। अब गोला फँसाने की बारी। पत्थर ले लो या अगर कुछ कम चोट पहुँचाने वाला या चोट न पहुँचाने वाला गोला चाहो तो काग़ज़ को गुड़ी-मुड़ी करके गोला बना लो। इसे रबरबैण्ड की दोनों तनी हुई पट्टियों के बीच फँसा दो।

अब आई तोप चलाने की बारी। चलाने से पहले ध्यान रखना कि इसके आगे-पीछे कोई बैठा या खड़ा न हो वर्ना उसे चोट लग सकती है। माचिस की एक काड़ी सुलगाओ और रबरबैण्ड से बँधे धागे को जला दो। क्या हुआ?

जैसे ही धागा जलकर दो हिस्सों में बँटा, तोप का गोला छूटकर आगे की ओर भागा होगा और तोपगाड़ी पीछे की ओर लुढ़क गई होगी, है न। अब ज़रा यह सोचो कि यह सब हुआ कैसे? तोप को इतनी तेज़ी से गोला फेंकने की ऊर्जा कहाँ से मिली? कुछ समझ में आए तो हमें लिख भेजना।

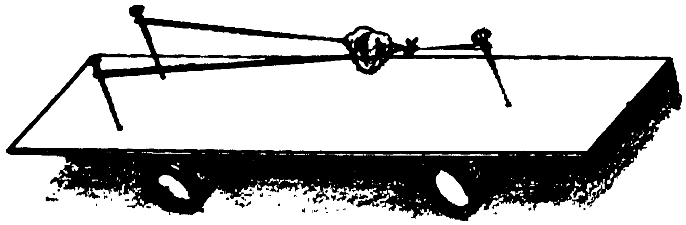

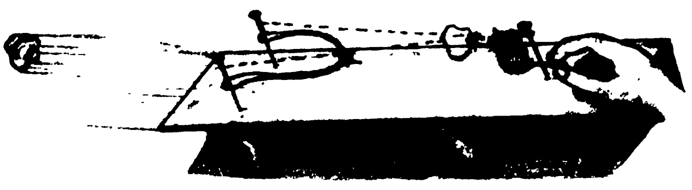

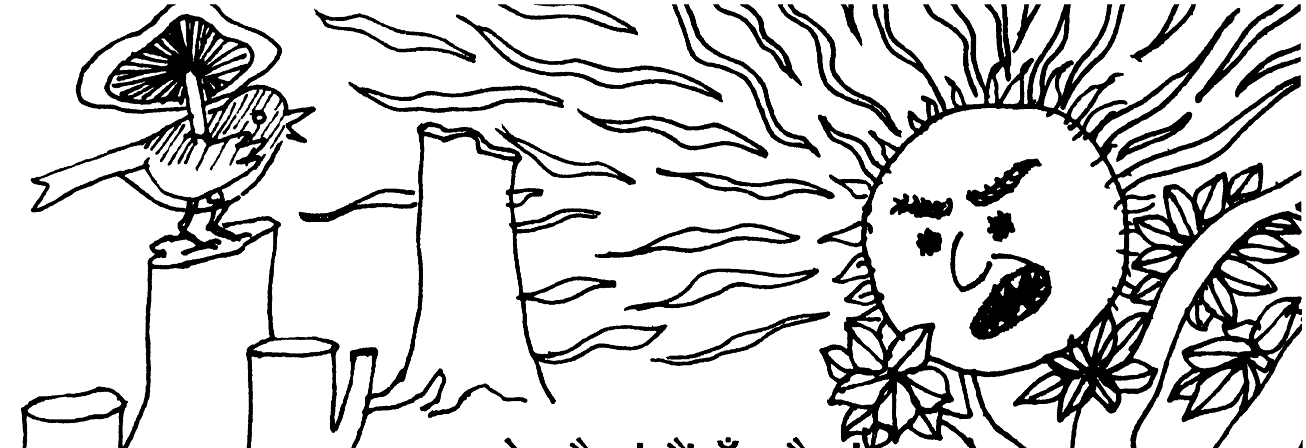

तुम हो कौन! मैं हूँ कौन!

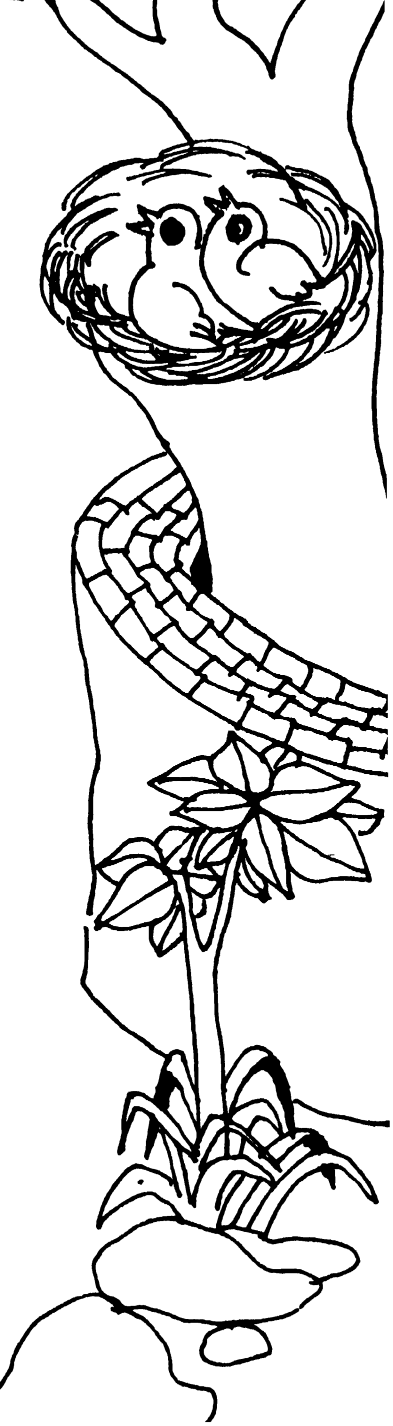

तुमने काटे पेड़ समूचा जंगल काटा
भरी धूप में छीना अपनी माँ का छाता
मैंने अपने घर के आगे पेड़ लगाया
पेड़ लगाया
बोलो! बोलो! तुम हो कौन! मैं हूँ कौन!

तुमने उड़ती चिड़िया मारी
कुछ भी ना कर पाई बिचारी
मैंने उसके बच्चों का घोंसला बनाया
खूब सजाया
बोलो! बोलो! तुम हो कौन! मैं हूँ कौन!

तुमने गाली देना सीखा
उसको गाली जो भी दीखा
मैंने अपना खुला खुला घर बार बसाया
सबै बुलाया
बोलो! बोलो! तुम हो कौन! मैं हूँ कौन!

तुमने फूल सूँघ के फेंका
बोले अगर गधा-सा रेंका
मैंने स्वर संगीत बनाया
खूब सुनाया
बोलो! बोलो! तुम हो कौन! मैं हूँ कौन!

❑ नवीन सागर

आकाश नीम

नाम से तुम्हें लगेगा नीम की जाति का ही कोई पेड़ है यह, लेकिन है नहीं। दरअसल यह पेड़ बहुत ऊँचा-लम्बा होता है और सीधा बढ़ता है। इसकी लम्बाई 18 मीटर तक होती है। आकाश नीम बर्मा का मूल निवासी है। भारत में यह लगभग सभी जगह पाया जाता है। यहाँ जंगलों में तो यह मिलता ही है साथ ही शहरों में भी सड़क के किनारे ख़ूब देखने में आता है।

यह पेड़ आमतौर पर अपने सुन्दर फूलों के लिए सजावट के तौर पर लगाया जाता है। इस पेड़ की जड़ें छिछली होने के कारण इसके नीचे दूसरे पेड़ का बढ़ना मुश्किल होता है। यह सदा हरा रहने वाला पेड़ है।

इसकी संयुक्त पत्तियाँ छोटी-छोटी उपपत्तियों से मिलकर बनी होती हैं। अन्त में एक उपपत्ती होती है। सर्दियाँ ख़त्म होते-होते पत्तियाँ गिरने लगती हैं। और इसके साथ ही नई पत्तियाँ भी आने लगती हैं। पत्तियाँ गिरने और फिर आने का समय जनवरी से मार्च के बीच का होता है। यह इस तरह होता है कि पेड़ कभी भी पत्तियों से ख़ाली नहीं होता।

आकाश नीम में लगने वाले फूल सफ़ेद पँखुड़ियों और लम्बी डण्डी वाले होते हैं। आधार से लम्बी नली के आकार का फूल ऊपर की ओर जाकर चार पँखुड़ियों में बँट जाता है। इस फूल की एक अनोखी बात यह है कि इसकी तीन पँखुड़ियाँ तो साधारण होती हैं पर एक हमेशा नोक से थोड़ी-सी कटी हुई होती है। फूल अप्रैल से जून तक आते हैं। फिर एक बार सितम्बर से दिसम्बर तक भी फूल खिलते हैं। फूल गुच्छों में खिलते हैं। जब ये फूल खिलकर झड़ते हैं तब पेड़ों के नीचे फूलों की चादर-सी बिछ जाती है। इन फूलों में हल्की भीनी-सी खुशबू होती है।

इस पेड़ में लम्बे, सँकरे नुकीले फल लगते हैं। फल में पतले, चपटे बीज होते हैं। यह पेड़ नमी वाले वातावरण में खूब अच्छे से बढ़ता है। कभी-कभी सूखे मौसम वाले इलाक़ों में भी इसकी अच्छी बढ़त होती है। गर्मी के मौसम के अन्त में इसके बीज लगाए जाते हैं जो कि लगभग एक साल बाद अंकुरित होते हैं। बारिश के शुरू में नई पौध तैयार होती है। उसके बाद इसकी बढ़त तेज़ी से होती है।

इस पेड़ की लकड़ी पीली-सी सफ़ेद रंग की मुलायम और भारी होती है। यह लकड़ी टिकाऊ होती है इसलिए इससे फ़र्नीचर, मूर्तियाँ, ड्राइंग बोर्ड आदि बनाए जाते हैं। इसकी छाल से कॉर्क भी बनता है शायद इसीलिए अंग्रेज़ी में इसे इन्डियन कॉर्क ट्री (INDIAN CORK TREE) कहते हैं।

माथापच्ची

(1)

हमारे गाँव में हाइस्कूल नहीं है। इसलिए रोज़ मुझे 11.32 बजे की ट्रेन पकड़कर पास के कस्बे में जाना पड़ता है। आज भी मैं रोज़ की तरह पैदल स्टेशन जा रही थी, पर आज मुझे देर हो गई थी। स्टेशन अभी लगभग 300 मीटर दूर था और 11.30 हो रहे थे। मैंने अपनी रफ़्तार एकदम बढ़ा दी। आधी दूरी मैंने लगभग 120 मीटर प्रति मिनट की तेज़ी से तय की। फिर लगा कि इससे काम नहीं बनेगा तो बाकी रास्ता मैं दौड़ते हुए गई और ट्रेन पर चढ़ते ही ट्रेन चल पड़ी। तो आख़िर के आधे रास्ते मैंने कितनी रफ़्तार से दौड़ लगाई होगी?

(2)

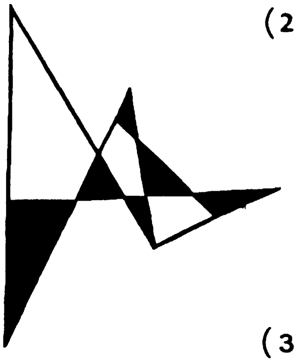

इस चित्र में से तुम कितने त्रिभुज ढूँढ पाते हो? कोशिश कर देखो।

(3)

छुट्टियों में मैं अक़्सर रज़िया से किताबें लेकर पढ़ता हूँ। उसे किताबों का बेहद शौक है और खूब किताबें हैं उसके पास। इस साल उसके स्टॉक में 11 नई किताबें आई हैं–5 विज्ञान की, 4 कहानियों की और 2 पहेलियों की। आज जब मैं किताबें लेने गया तो उसने कहा, तुम तीनों तरह की 1–1 किताब ले सकते हो। बहुत देर तक मैं किताबें पलटता रहा। सभी ले आने को मन ललचा रहा था। फिर मैं सोचने बैठ गया कि तीनों तरह की 1–1 किताब लेने पर कितनी अलग–अलग तरह की जोड़ियाँ बन सकती हैं? अब भी बैठा सोच रहा हूँ। तुम मदद करो वर्ना किताब लेकर घर नहीं जा पाऊँगा!

(4)

चकमक के पाठक ऐसी पहेलियाँ पहले भी हल कर चुके है। यहाँ ऐसे शब्दों की जोड़ियों के लिए कुछ संकेत दिए जा रहे हैं जो आपस में उलटे–पुलटे हैं। यानि पहला संकेत जिस शब्द का है, उसे पलटकर पढ़ने पर दूसरे संकेत के शब्द को पाया जा सकता है। पहला उदाहरण देखो–

क. 1. राय, न, नहीं –– मत
   2. तमगा की शुरूआत में अंधेरा ––– तम

ख. 1. कुछ विशेष
   2. दोस्त, मित्र

ग. 1. काम में तल्लीन
   2. भीगा हुआ, गीला

घ. 1. स्मरण
   2. रहम, करूणा

ङ. 1. कीमती चमकदार पत्थर
   2. है तो चलने वाला पर आगे 'सु' लगाओ तो पानी को भी ठण्डा रखे।

☐ मायाराम सोनकर, रूदगाँव, राजनाँदगाँव, म. प्र.

(5)

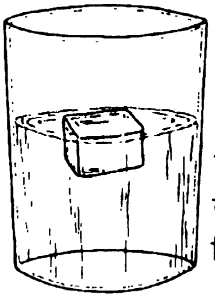

यह प्रयोग शायद तुम में से कइयों ने किया हो। एक गिलास को आधा पानी से भर लो और उसमें बर्फ़ का एक टुकड़ा तैरा लो। फिर करना यह है कि सिर्फ़ एक डोरी की मदद से, बिना बर्फ़ के टुकड़े को छुए, उसे बाहर निकालना है। बताओ कैसे?

वैसे इस ठण्डी पहेली का हल काफ़ी नमकीन है। और जिन लोगों को हल पहले से ही मालूम है वे यह बताएँ कि ऐसा होता क्यों है?

(6)

अगर एक छर्रे को एक सर्पिलाकार नली में ऊपर से छोड़ दिया जाए तो गोल–गोल घूमते हुए जब वह बाहर निकलेगा तो उसकी चाल कैसी होगी? यहाँ चार चित्र चार अलग–अलग सम्भावनाएँ दिखा रहे हैं। तुम्हारे हिसाब से कौन–सी सबसे सही है?

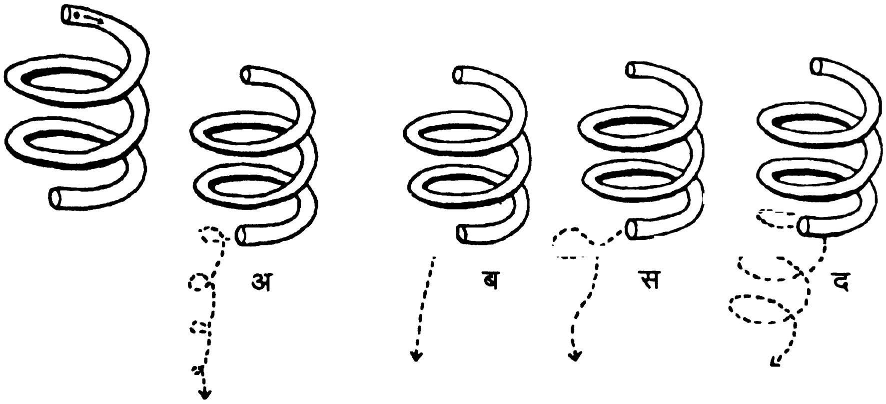

वर्ग पहेली –65

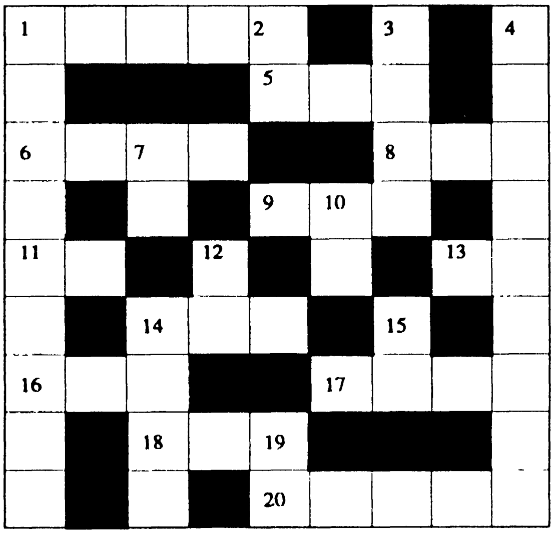

संकेत: बाएँ से दाएँ

1. 1942 में अंग्रेज़ों के खिलाफ शुरू किया गया एक ऐसा आन्दोलन जिसमें उनके कामों में साथ देना बन्द कर दिया गया था (5)
5. शत पिण्ड में गर्मी है (3)
6. गजरा नाम में ढूँढो एक खतरनाक जीव (4)
8. ला रस्सी, रसदार (3)
9. खोए की यह मिठाई तो सबने खाई होगी (3)
11. मार– मारकर याद दिलाई लक्ष्मी की (2)
13. इसमें छुपा है मोती (2)
14. मायका या पिता का घर (3)
16. मन का घर, ईंट गारे का (3)
17. मूर्ख (4)
18. जिसकी हँसी खूबसूरत हो (3)
20. मुँह ही मुँह में बोलना (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. किसी के घर बेहिचक आना– जाना, एक मुहावरा (3,2,4)
2. बीता हुआ, हालत (2)
3. सोने का सिक्का या सिक्के की छाप (4)
4. मुहावरे में बेहद गुस्सा होना (2,2,2,3)
7. जलने के बाद बची (2)
10. दानेदार है, उचित है (2)
12. हरे खोपरे में कन्दरा ढूँढो (2)
14. आँखों को मिलने वाला आनंद (4)
15. हमाम के अन्दर महीना घुसा (2)
19. समस्त (2)

□ वरुण कुमार शर्मा, गिधपुरी, रायपुर, म. प्र.

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली – 65 का हल जनवरी, 1997 के अंक में देखें।

चिड़िया

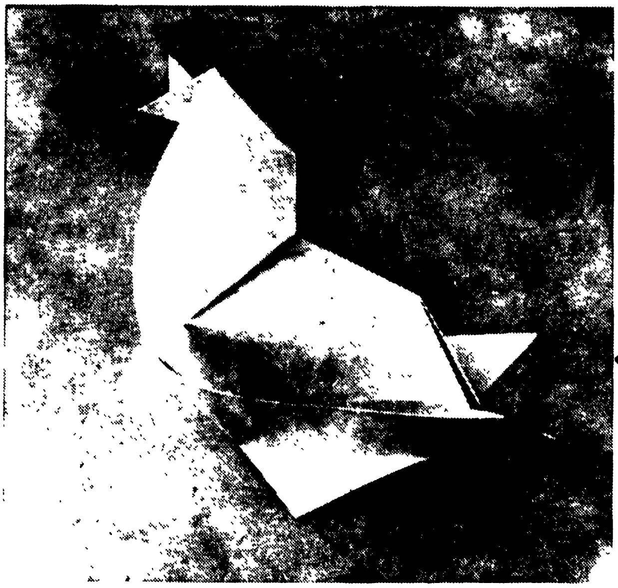

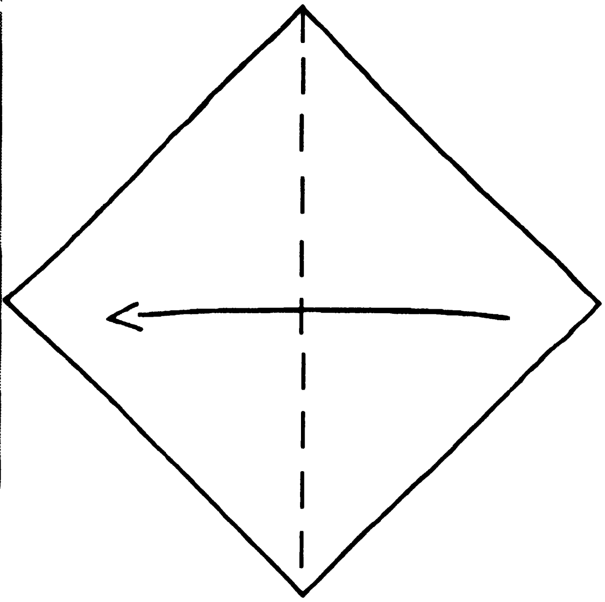

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।

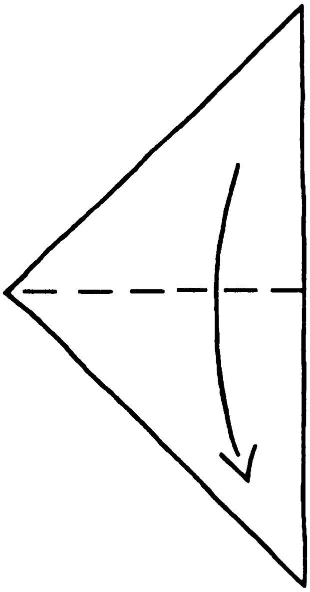

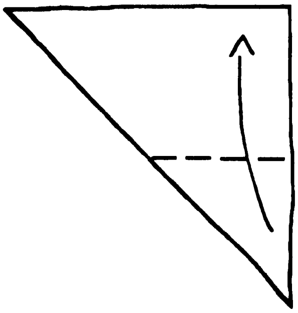

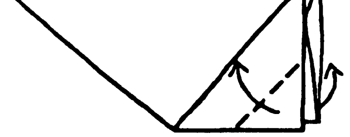

2. इस आकृति को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

3. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। आकृति को पलटकर उस ओर भी ऐसा ही मोड़ बना लो।

4. अब इस आकृति को चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। आकृति को पलटकर उस ओर भी इसी तरह मोड़ लो।

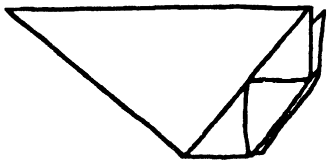

5. इस तरह की आकृति बनेगी। आकृति की ऊपरी परत को पकड़कर एक मोड़ खोल लो। फिर पूरी आकृति को पलट लो।

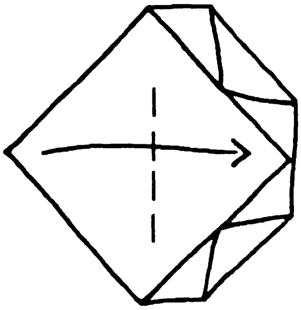

6. इस तरह की आकृति दिखेगी। इसे टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

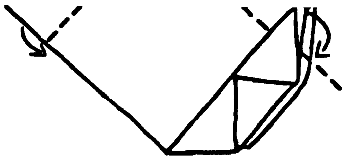

7. इस तरह। इस चित्र में ऊपर और नीचे की ओर दिख रही टूटी रेखाओं पर से अन्दर की ओर मोड़ बना लो।

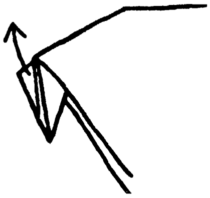

8. देखो इस चित्र में ऊपर की ओर के मोड़ को अन्दर की तरफ मोड़ते हुए दिखाया है। यहाँ दो परतों में से एक को तीर की दिशा में लाकर खोल लो।

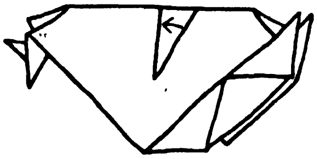

9. इस तरह की आकृति बन जाएगी। अब एक ख़ास काम है आकृति के बीच में दिख रही रेखाओं पर से मोड़ बनाना है। नीचे वाली रेखा से अन्दर की ओर मोड़ो, ऊपर वाली रेखा से बाहर की ओर मोड़ो।

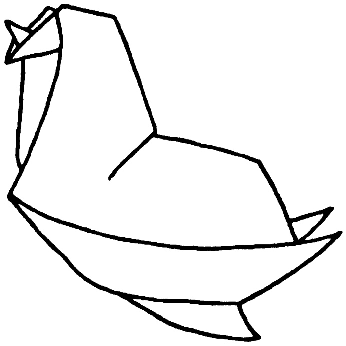

10. आकृति को ऊँगली से फुला लो और बाकी तुम चित्र देखकर तय करो कि कैसे क्या करना है।

शिक्षकों तथा शिक्षा में रूचि रखने वालों के लिए
एकलव्य का द्वैमासिक प्रकाशन

वार्षिक चन्दा (6 अंकों के लिए) रु. 35=00
डाकखर्च मुफ्त। चन्दा मनीआर्डर या एकलव्य के नाम में बने ड्राफ्ट से निम्न में से किसी एक पते पर भेजें :-
- ❑ एकलव्य, कोठी बाजार, होशंगाबाद, म.प्र. 461001
- ❑ एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल, म.प्र. 462 016

क़िस्सा-बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा : जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो। वह बहुत शरारती था।

अपनी शरारतों के कारण वह एक बिल्ले और लोमड़ी के चुंगल में फँस गया। बिल्ला और लोमड़ी बुरातीनो से सोने के सिक्के हथियाना चाहते थे। उन्होंने उसके सामने मूरखनगरी चलने का प्रस्ताव रखा और कहा कि वहाँ सोने के सिक्कों को ज़मीन में गड़ा देने पर सिक्कों का पेड़ उग आएगा। यह सुनकर बुरातीनो मूरखनगरी जाने के लिए तैयार हो गया।

वे तीनों चलते-चलते एक ढाबे में पहुँचे। वहाँ तीनों ने बढ़िया खाना खाया और रात रुकने का फैसला किया। सुबह होने के पहले ही बिल्ला और लोमड़ी वहाँ से आगे बढ़ लिए। सुबह बुरातीनो को खाने के एवज़ में सोने का एक सिक्का ढाबा मालिक को देना पड़ा।

जंगल के रास्ते में दो नकाबपोश डाकुओं ने बुरातीनो पर हमला किया। बुरातीनो किसी तरह उनसे बचता एक झील के पार पहुँचा। अब आगे पढ़ो .....

डाकुओं ने बुरातीनो को पेड़ से लटकाया

थका हुआ बुरातीनो कठिनाई से चल पा रहा था जैसे पतझड़ की कोई मक्खी हो। अचानक एक झाड़ी के पीछे उसने एक ख़ूबसूरत मैदान देखा, उसके बीचोंबीच छोटा-सा, चार खिड़कियोंवाला घर था, जो चाँदनी में चमक रहा था। झिलमिलियों पर सूरज, चाँद और सितारों के चित्र बने हुए थे। आसपास बड़े-बड़े आसमानी रंग के फूल खिले थे।

रास्ते पर साफ़-सुथरी रेत बिछी हुई थी। फ़व्वारे से पतली सी जलधारा निकल रही थी, उस पर छोटी सी धारीदार गेंद उछल रही थी।

बुरातीनो हाथ-पैर का सहारा लेकर बरामदे में चढ़ गया। उसने दरवाज़ा खटखटाया। घर के भीतर सन्नाटा था। उसने और ज़ोर से खटखटाया शायद लोग गहरी नींद में सो रहे हैं।

ठीक इसी समय जंगल से वे डाकू फिर झपटे। उन्होंने तैरकर झील को पार किया था, उनके भीगे शरीर से जल धाराएँ बह रही थीं। बुरातीनो को देखते ही ठिंगने क़दवाला डाकू दुष्टता से बिल्ली की तरह फुफकारा जबकि लम्बे क़दवाला लोमड़ी की तरह किकियाया।

बुरातीनो दरवाज़े पर हाथ-पैर मारने लगा, "बचाओ, बचाओ, भले लोगो!"

तब खिड़की से घुँघराले बालों वाली एक सुन्दर-सी लड़की ने बाहर झाँका। उसकी आँखें बन्द थीं।

"दरवाज़ा खोल दो, बहन! डाकू मेरा पीछा कर रहे हैं!"

"हुँ, क्या बकवास है!" ख़ूबसूरत-सा मुँह खोलकर जंभाई लेते हुए लड़की ने कहा, "मुझे नींद आ रही है, मैं आँखें नहीं खोल सकती..."

उसने हाथों को ऊपर उठाया, नींदभरी अंगड़ाई ली और खिड़की के पीछे ग़ायब हो गई।

हताश होकर बुरातीनो औंधे मुँह रेत पर गिर पड़ा, जैसे कि वह मर गया हो।

डाकुओं ने छलाँग लगाई, "अहा, अब तू बचकर कहाँ जाएगा!"

उन्होंने भरसक प्रयत्न किया कि बुरातीनो अपना मुँह खोल दे। अगर उन्होंने चाकू और पिस्तौल न खो दिए होते, तो बेचारे बुरातीनो का यहीं काम तमाम हो जाता।

आख़िरकार डाकुओं ने उसे सिर नीचा करके लटकाने का फ़ैसला किया। उन्होंने उसकी टाँगों में रस्सी बाँधी और बुरातीनो को बलूत वृक्ष की एक डाल पर लटका दिया। वे वृक्ष के नीचे भीगी दुम फैलाकर बैठ गए और प्रतीक्षा करने लगे कि कब उसके मुँह से सोने के सिक्के नीचे गिरेंगे।

सुबह तड़के हवा चलने लगी, बलूत वृक्ष की पत्तियाँ खड़खड़ाने लगीं। बुरातीनो हवा में एक तख़्ती की तरह हिल रहा था। भीगी दुमों पर बैठे-बैठे डाकू उकता गए थे।

"शाम तक लटके रहो, बच्चू," उन्होंने कुढ़ते हुए कहा और किसी ढाबे की तलाश में निकल पड़े।

नीलकेशिनी ने बुरातीनो की जान बचाई

बलूत वृक्ष की शाखाओं के पीछे, जहाँ बुरातीनो लटका हुआ था, भोर का उजाला फैल गया। मैदान में घास नीलाभ हो गई, आसमानी रंग के फूलों की

पँखुड़ियों पर ओस की बूँदें जम गईं। नीले घुँघराले बालों वाली लड़की ने फिर खिड़की से बाहर झाँका, आँखें मलीं और नींद से बोझिल बड़ी-बड़ी लुभावनी आँखों को खोला।

यह लड़की काराबास बाराबास के कठपुतली थियेटर की सबसे ख़ूबसूरत पुतली थी। मालिक की अशिष्ट हरकतों से तंग आकर उसने थियेटर छोड़ दिया था और नील उपवन के इस एकान्त नन्हे से घर में रहने लगी थी। पशु, पक्षी और तरह-तरह के कीट-पतंगे उसे बहुत प्यार करते थे। शायद इसलिए कि वह एक शिष्ट, विनम्र लड़की थी।

वन्य जीव उसके लिए जीवनोपयोगी वस्तुएँ जुटाया करते थे। छछूंदर कन्दमूल लाया करता था। चूहे चीनी, पनीर और सॉसेज के टुकड़े लाते थे। वफ़ादार कुत्ता आर्तेमोन रोटियाँ लाता था।

मैगपाई चिड़िया बाज़ार से चमकीली पन्नियों में लिपटी मीठी-मीठी चॉकलेट लाती थी।

मेंढक अखरोट के छिलकों में लेमनेड ले आते थे। बाज़ भुना हुआ शिकार जुटाता था। गुबरैले तरह-तरह की बेरियाँ लाते थे। तितलियाँ पाउडर के लिए पुष्प पराग संचित करती थीं। सूंड़ियाँ दन्त मंजन और दरवाज़े की पॉलिश बनाती थीं। अबाबील पक्षी घर के आस-पास भुनगे और मच्छरों की सफ़ाई करते थे। नीलकेशिनी ने आँखें खोलीं और देखा कि बुरातीनो सामने पेड़ पर सिर के बल लटका हुआ है।

गालों पर हाथ रखकर वह चिल्लाई, "अरे, अरे, अरे!"

खिड़की के नीचे कान फड़फड़ाते हुए वफ़ादार कुत्ता आर्तेमोन हाज़िर था। उसने अभी थोड़ी देर पहले ही तो अपने बालों की करीने से कॉंट-छाँट की थी, यह उसका नित्य कर्म था। उसके धड़वाले अग्रभाग के छल्लेदार बाल करीने से सँवरे हुए थे, दुम के छोर पर काला फ़ीता बंधा हुआ था और अगले पंजे पर रुपहली घड़ी।

"हाज़िर हूँ!"

आर्तेमोन ने नाक घुमाई और ऊपरी होंठ उठाकर सफ़ेद दाँत चमकाए।

"आर्तेमोन! किरी को बुलाओ! बेचारे बुरातीनो को पेड़ से उतारकर घर में लाना और डाक्टर को बुलाना चाहिए," लड़की ने कहा।

"मैं चला!"

आर्तेमोन इस तरह तेज़ी से घूमा कि उसके पिछले पंजों से टकराकर भीगी हुई रेत उड़ चली। वह चींटियों की बाँबी की तरफ़ दौड़ गया, उसने भूँक-भूँककर उस बस्ती के सभी जीवों को जगा दिया और चार सौ चींटियों को उस रस्सी को काटने भेज दिया था जिस पर अभागा बुरातीनो बँधा हुआ लटक रहा था।

चार सौ कर्मठ चींटियों की फ़ौज ने कतार बनाकर बलूत वृक्ष पर हमला कर दिया और रस्सी को काट डाला।

बुरातीनो के गिरते ही आर्तेमोन ने उसे अगले पंजों पर लपककर पकड़ लिया और घर ले आया। उसे पलंग पर लिटाकर वह बेतहाशा भागता हुआ जंगल में विलीन हो गया और थोड़ी देर में मशहूर डाक्टर घुग्घू, चिकित्सा सहायिका मेंढकी और हकीम टिड्डामल को भी साथ ले आया जो सूखे तिनके की तरह सींक-सलाई था।

डाक्टर घुग्घू ने बुरातीनो के सीने पर कान लगाकर जाँच की।

"मरीज़ दम तोड़ रहा है, उसके बचने की आशा नहीं," डाक्टर घुग्घु फुसफुसाया और अपना सिर पीछे की ओर घुमा लिया।

चिकित्सा सहायिका मेंढकी अपने भीगे पंजे बुरातीनो के शरीर पर देर तक फेरती रही। अपने ख़्यालों में खोई वह उभरी-उभरी आँखों से चारों तरफ देखने लगी। मुँह छपछपाते हुए बोली, "मरीज़ बच जाएगा। ख़तरा टल चुका है ..."

हकीम टिड्डामल ने अपने तिनके जैसे सूखे हाथों से बुरातीनो की नब्ज़ टटोल-टटोलकर देखी, "दो में से एक ही सम्भावना है - मरीज़ या तो ज़िन्दा है या मर चुका है। अगर वह ज़िन्दा है तो बच जाएगा या फिर दम तोड़ देगा। अगर वह मर चुका है तो उसमें प्राण फूँके जा सकते हैं या फिर नहीं फूँके जा सकते।"

"क्या नीमहकीमी झाड़ रहे हो," घुग्घु ने कहा, कोमल पंख फड़फड़ाए और अन्धेरी अटारी पर उड़ गया।

मेंढकी ने कुढ़कर मुँह फुला लिया।

"क्या मूरखता है," मेंढकी टरटर्राई और पेट छपछपाते हुए सीलनदार तहख़ाने में कूद गई।

हकीम टिड्डामल ने सूखी टहनी होने का दिखावा किया और खिड़की से बाहर कूद गया। लड़की ने अपने कोमल-कोमल हाथ झटके और बोली, "अब इसका इलाज कैसे किया जाए?"

"अण्डी के तेल से," मेंढकी तहख़ाने से टर्र-टर्र करते हुए बोली।

"अण्डी के तेल से!" अटारी पर बैठे डाक्टर घुग्घू ने मेंढकी की नकल उतारते हुए ठहाका लगाया।

"अण्डी का तेल दिया भी जा सकता है और नहीं भी," खिड़की के पीछे से टिड्डामल किटकिटाया।

तब अभागे बुरातीनो ने, जिसके सारे शरीर पर खरोंचें आ गई थीं और नील पड़े हुए थे, दर्द से कराहते हुए कहा, "अण्डी के तेल की ज़रूरत नहीं, मेरी तबीयत ठीक है!"

नीलकेशिनी ने बुरातीनो को समझाते हुए कहा, "मान भी जाओ, बुरातीनो, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। आँखें मूँद लो, नाक बन्द कर लो और पी जाओ इसे झटपट!"

"मुझे नहीं पीना है, नहीं पीना है, नहीं पीना है!"

"मैं तुम्हें चीनी का डला दूँगी..."

तत्काल पलंग पर एक सफ़ेद चूहा हाज़िर हो गया, वह चीनी का एक डला लाया था।

"सुनो, मेरी बात मान जाओगे तो इसे दूँगी," लड़की ने कहा।

"ला... ली ... पाप दीजिए..."

"समझते क्यों नहीं - दवा नहीं पिओगे तो मर जाओगे।"

"अण्डी का तेल पीने से मरना भला..."

तब लड़की सख़्ती से बोली, "नाक दबाओ और छत की ओर देखो ... एक, दो, तीन!"

उसने बुरातीनो के मुँह में दवा उंडेल दी और झट से उसके मुँह में चीनी का डला रख दिया। फिर एक हल्का-सा चुम्बन उसके गाल पर जड़ दिया।

"बस ..."

वफ़ादार आर्तेमोन ने लक्ष्य की सफलता से ख़ुश होकर अपनी दुम पकड़ी और खिड़की के नीचे बवण्डर की तरह घूमने लगा, मानो उसके सहस्र पंजे, सहस्र कान और सहस्र चमकदार आँखें हों।

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार।
लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय, सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोरिकन)

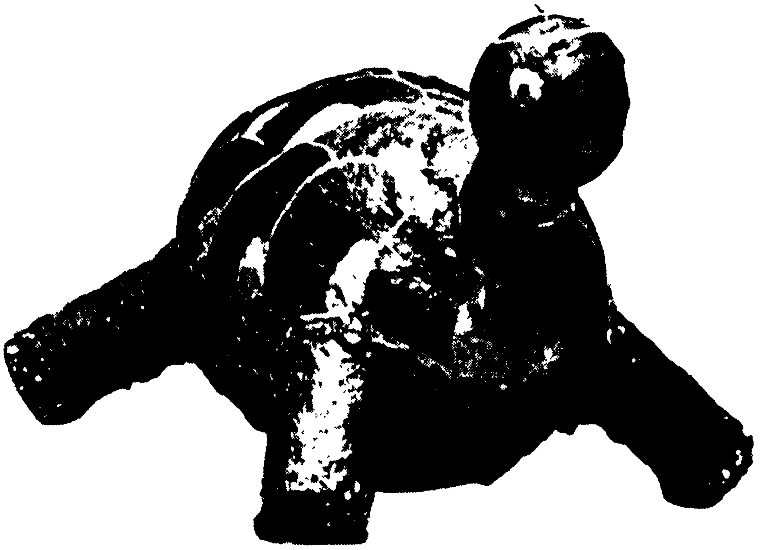

लुगदी का कछुआ
कछुए में नगदी

यह कछुए के आकार की गुल्लक बनी तो काग़ज़ की लुगदी से है, पर इसका आधार बनाने के लिए तुम्हें गुब्बारा और पुराना, इस्तेमाल किया हुआ पोस्टकार्ड चाहिए होगा। कछुआ बनाने के लिए ढेर सारा रद्दी काग़ज़, गोंद या मैदे की लेई, सुई-धागा, रंग, ब्रश और ब्लेड इकट्ठा कर लो। लुगदी के लिए पुराने अख़बार सबसे अच्छे रहते हैं।

काग़ज़ का थोड़ा-सा हिस्सा लम्बी-लम्बी पट्टियों में काट लो। लुगदी बनाने के लिए बाक़ी काग़ज़ की चिन्दियाँ फाड़कर उसे दो-तीन दिन तक पानी में भिगोकर रखो। जब ये भीगकर नर्म हो जाएँ तो इसे खल-बत्ता या सिल-बट्टे पर कूटकर छुई मिट्टी मिलाते हुए आटे जैसा गूँथ लो। चाहो तो थोड़ा-सा मैथी दाना पीसकर डाल दो। मैथी डालने से लुगदी में कीड़े नहीं लगते और उसमें थोड़ी लोच या लचीलापन भी आ जाता है।

अब ढाँचा बनाते हैं। गुब्बारे को उतना फुला लो जितना बड़ा तुम्हें कछुआ या गुल्लक बनाना हो। अब काग़ज़ की पट्टियाँ एक-एक करके इस पर लपेटते जाओ और उन्हें लेई से चिपकाते भी जाओ। पट्टियों की दो-तीन तह चिपक जाने के बाद ढाँचे के पैर और गर्दन बनाने हैं। इसके लिए पोस्टकार्ड को लम्बाई में गोल करके उसकी लम्बी नली बना लो। कार्ड के बाहरी सिरे को गोंद से चिपका लो। अब इस नली के पाँच टुकड़े करने हैं। इसके लिए बराबर दूरी पर चार निशान लगाकर पहला टुकड़ा सीधा काट लो। काटने के लिए ब्लेड का उपयोग करना, मगर सावधानी से। फिर बाक़ी नली को बीच से आधा कर लो। अब इन दो टुकड़ों के भी दो-दो हिस्से करने हैं। पर चित्र में दिखाए तरीक़े से टेढ़ा काटते हुए।

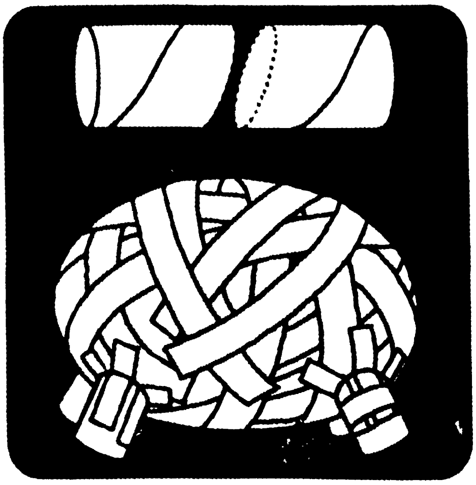

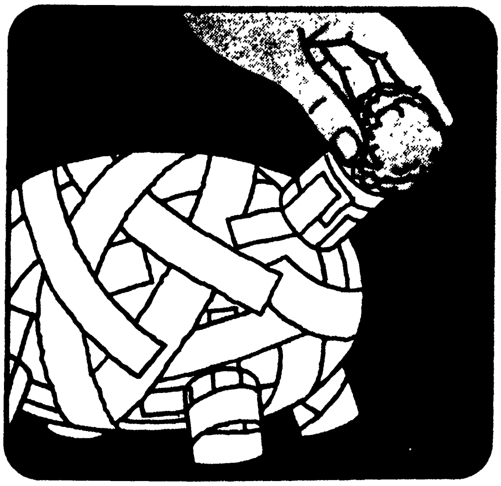

चारों टेढ़ी सतह वाले टुकड़ों से पैर बनाएँगे और सीधे टुकड़े से गर्दन। इन टुकड़ों को शरीर से जोड़ने के लिए लेई और काग़ज़ की पट्टियों का इस्तेमाल कर सकते हो। पट्टियाँ सूख जाएँ तो उस पर लुगदी का एक मोटा-सा लेप लगा दो। सिर बनाने के लिए लुगदी का गोला बनाकर उसे गर्दन के ऊपर चिपका दो। गर्दन पर भी लुगदी का लेप लगाना। बस कछुए की निचली सतह पर लुगदी नहीं लगाना है। क्यों? यह तुम बाद में ख़ुद ही समझ जाओगे। लुगदी पर गीला हाथ फेरकर उसे चिकना करो। कछुए को जहाँ रखकर बनाया है उसे वहीं दो--तीन दिन पड़ा रहने दो ताकि वह सूख जाए। उठाने-रखने में उसका आकार बिगड़ सकता है।

गुल्लक का मुँह बनाने के लिए कछुए को सीधा खड़ा करके ब्लेड से सावधानी से उसकी पीठ पर ढाई सेंटीमीटर लम्बे दो कट लगाओ - पास-पास। इन कटों के बीच का हिस्सा काटकर फेंक दो। बस, गुल्लक का मुँह तैयार है। अब जल्दी से अपनी बचत योजना चालू कर दो। जब गुल्लक पूरी भर जाए तो कछुए को चारों खाने चित्त करके कैंची से उसके पेट में एक छेद बना लो।

अरे हाँ, अगर चित्र की तरह अपने कछुए को सजाना चाहो तो रंग कर लो या रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सँवार लो। इसमें बताना क्या?

माथापच्ची : हल अक्टूबर, 96 अंक के

2. $6 + \frac{6}{6}$

3.

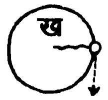

4. (1) जामुन
   (2) सेब
   (3) केला
   (4) बेर

5.

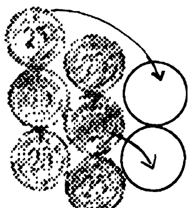

6. इन चित्रों में जोड़ियाँ इस तरह बनेंगी :
   1 और 7, 2 और 6, 3 और 8, 4 और 5.

7. गोल चकती के नीचे 32 खाने पूरे-पूरे छिप जाएँगे।

9.

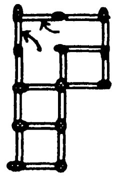

वर्ग पहेली 62 का हल

1 अ		2 मा	सू	3 म		4 मि	5 नि	ट
6 जी	व	न		7 त	र्ज़		क	
ब		व		ल		8 म	ट	9 का
	10 ती		11 स	ब	12 ला			बी
13 व	न	मा	ली		14 तू	ल	15 दे	ना
ज़ी			16 ब	17 स	र		र	
18 फा	19 ल	सा		ह		20 फी		21 अ
	च		22 घा	म		23 रो	श	न
24 आ	र	जू		25 त	मी	ज़		ल

वर्ग पहेली - 62 का सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठकों के नाम हैं - प्योली, वाराणसी, उ. प्र.; टीकमसिंह पोर्ते, गजमा, रायगढ़; काजलसिंह गेहलोत, शुजालपुर, शाजापुर, दोनों म. प्र.। इन्हें तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।

अंकित, उज्जैन, म.प्र.

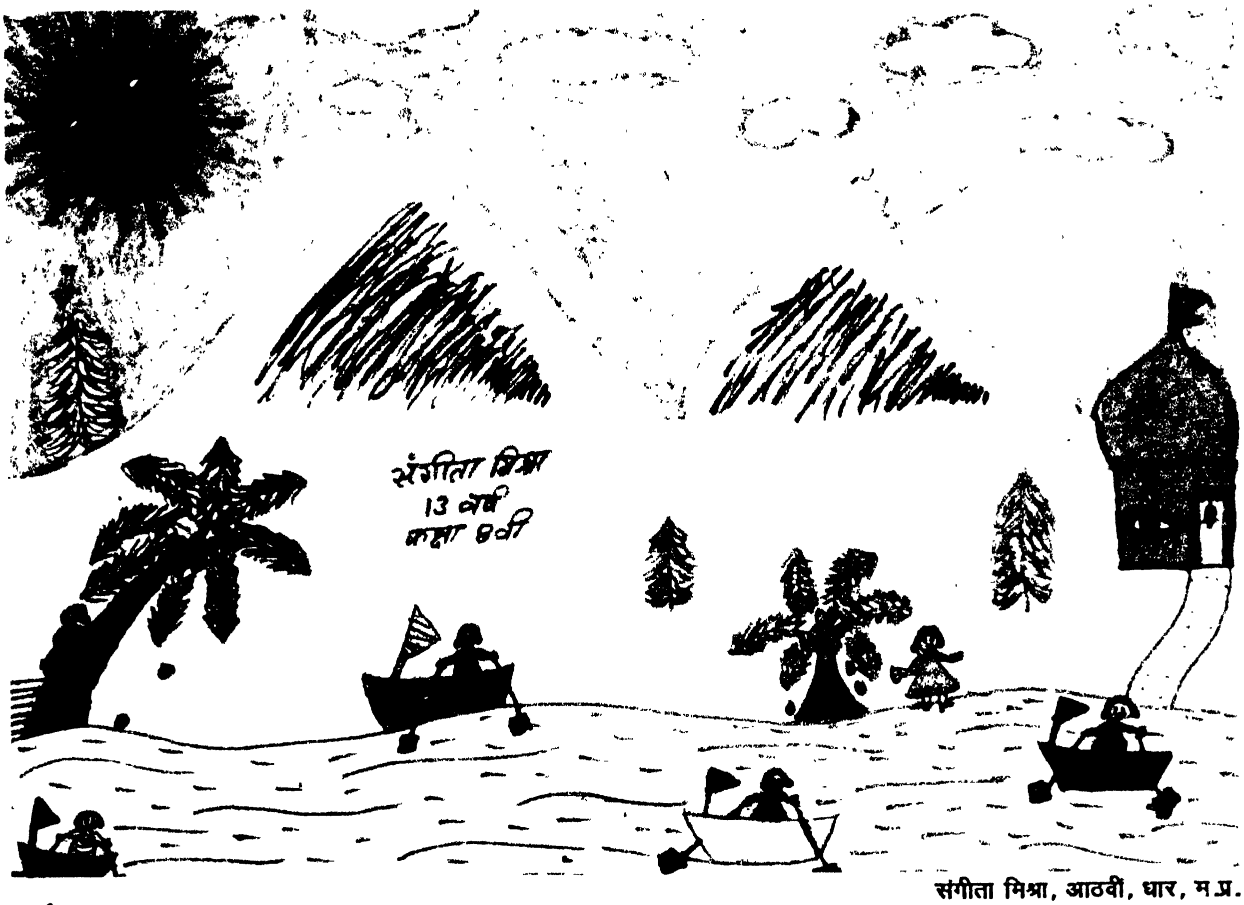

संगीता मिश्रा, आठवी, धार, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/96

12626

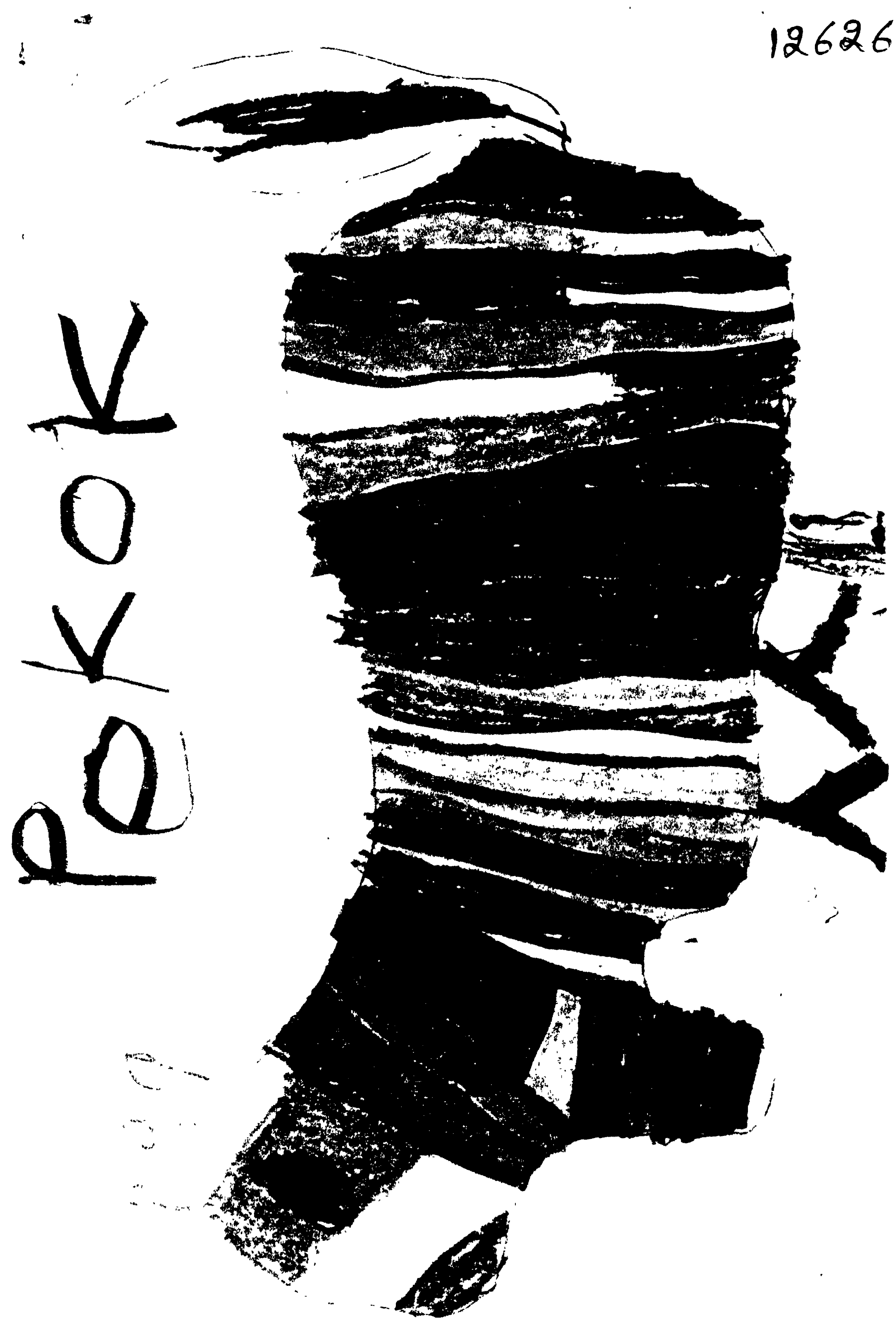

उर्वशी प्रसाद, छह वर्ष, दिल्ली

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना